



गीतरामायण

जिसमें

रामायण के सातकाण्डों की कथा अनेकप्रकार के
ललित पदों में वर्णित है

जिसको

सन्तसेवक महावीर दास मालवीय ब्राह्मण स्थान
कोंढ जिला मिर्जापूर बासीने रचना किया है ॥

बाजपेयि परिणत रामरत्न के प्रबन्धसे

पहलीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
मई सन् १८९३ ई०

इक तसनीफ़ महफूज है वहक इस छापेखाने के

गीतरामायण ॥

महावीरदासकृत

बालकाण्ड

सोहरछन्द ॥

आजु अवधपुर आनंद मंगल घर घरहो । ललना जनमें हैं
दसरथ भवन सुवन अति सुंदरहो । रामजनमकर मंगल अति
सुख गाइयहो । ललना जेहि गावत भयभागइ हरिपदपाइयहो १
सुर गन संकुल गगन मगन मन हरषइहो । ललना बाजहिं बि-
पुल निसान सुमन बहुवरषइहो । जूथ जूथ जुवती मिलि राउरआ
वइहो । ललना कनकथार भरि मंगलकर छवि पावइहो २ तिहुं
रिपु निधन मनावहिं हरषहिं अति मनुहो । ललना जियहु बरिस
सत कोटिबदहिं पुलकित तनुहो । भूपतिउर आनंद बरनि नहिं
जातइहो । ललना अतिसय पुलक प्रमोद न हृदय समातइहो ३
बोलेउ सेवक बोलि हरषजुत राजनहो । ललना मंगलरचहुबनाइ
बजावहु बाजनहो । सुनि चर चतुर प्रवीन बेगि सोइ कीन्हेउँहो ।
ललना सुर द्विजभवन सजाइ पुरहि चित दीन्हेउँहो ४ मंगन जोइ
जोइमागइँ सोइनृप दीन्हेउँहो । ललना जांचक सकल अजांचक
छनमहुँ कीन्हेउँहो । जहँ तहँ देइँ असीस पुरारि मनावइँहो । ल-
लना अजर अमर सुतहोहिं भूपसुख पावइँहो ५ मुनिगन चरन
निरंतर जाकर ध्यावइँहो । ललना सोइ प्रभु प्रगट अवधजन द-
र्शन पावइँहो । महावीर रघुवीर चरण मनलायेउहो । ललना जेहि
यह सादर मंगल गाइ सुनायेउहो ६ (बरवाछंद) प्रमुदित दं-
पाति पुरजन नर अरु नारि । परमानंद मगनमन तन सुखभारि ।

अति आनंद अवध नहिं सो कहि जाइ । सकललोग उरहरषित
 अंग अघाइ ७ (हरिगीतिका छंद) अघाइ अंगन्ह हर्ष पुर नर
 नारि अति आनंद पगे । गति देखि सुर इन्द्रादि मोहित विषय
 निसि सोवत जगे । उपजहिं अनंद नवीन छिन छिन देवगन जै
 जै कहैं । बरषहिं सुमन किन्नरि अलापहिं सुनत मुनिमन थकिर
 हैं ८ (बरवाछंद) बाजहिं गगन निशान अनेकप्रकार । ब्रह्मा-
 दिक मन हरषित समय विचार । उभयपक्ष कर दिवस भयो तेहि
 काल । लख्यौ न काहु मर्म जे बुद्धि बिसाल ९ (हरिगीतिका
 छंद) बिसाल बुद्धि जे रहेउ भेद न तिनहुं कहैं कछु लखिपरचो ।
 मन हर्षविवस अपान भूलेउ दिवस निसि गतिबिस्मरचो । नृपगुरु
 बसिष्ठ बोलाइ बहुविधि पायपरि आसन दियो । व्यवहार कुल
 आचारकरि पुनि श्राद्ध नांदीमुख कियो १० (बरवाछन्द) बहुरि
 दान विप्रन्हकहैं बहुविधि दीन्ह । हरषित भूपति आसिष बांछित
 लीन्ह । परम प्रमोद लोग सब मगन मुदाम । मैं तैं भूलेउ मन
 गति रहित अकाम ११ (हरिगीतिकाछन्द) अकाम मन गति
 रहित सबसुचि ब्रह्मसुख संतत लहैं । शिव सेष सारद निगम आ-
 गम अगम कबि कैसेकहैं । सुभसमय जानिसुनीस प्रमुदित राज
 मंदिर आयेऊ । कहि राम भरतरु लषण रिपुहन नाम नृपहि सुना
 येऊ १२ (रागठुमरी) चलोसखी चलो आजु राजभवनवाँ । अति
 आनंद सुधा बरषतजहैं भूपतिके भये चारि सुवनवाँ १ सुखमा
 सिंधु नयन निधि बालक समता कहैं जग अपर कवनवाँ । रूप
 अनूप संभु मन मानस बसत सदा प्रगटे हैं तवनवाँ २ देस देस
 के जुरे महीपति द्वार परम आनंद मगनवाँ । दरसन जेहि जी-
 वनु फल पाइय तीनिउँताप विषाद दमनवाँ ३ महावीर दिनरैन
 निरंतर अवध नारिनर पुलकित तनवाँ । ब्रह्मानंद मगन हरि
 छवि लखि बहत धन्य सुर बरषि सुमनवाँ ४ । १३ (राग जयति
 श्री) रघुबर बाल रूप निहारि । रहत जननी दिवसनिसि अति
 मुदितमन सुख भारि १ श्याम तनपद कंजनूपु । मधुर मुपर प्र-

चारि । सुखद हित जनु दास कहँरहे सदय हृदय हँकारि २ किं-
किनी कटि भीन भंगुली छजत बपु अनुहारि । नील गिरिपर
मनहुँ बिलसति दामिनी बहु धारि ३ थकित मति गति सकल
विधि सुखमा समूह विचारि । महावीर सप्रेम निरखत हर्षि दसा
विसारि ४ । १४ (चंचरीक) जननी लखि छवि अनूप सुख
समूह पावैं । कबहुँ प्रभुहि लेइँ गोद करत विविधि विधि विनोद
प्रेम पुलकि कबहुँ घालि पालने झुलावैं १ चहुँ सुत सुखमा अ-
गार अनुपमदुति अति अपार पेखि सहस कोटि काम विपुलछवि
लजावैं । आनन जनु ससि प्रकास निरखि मातु हिय हुलास सु-
ख समूह सारद प्रति नहीं बरनि जावैं २ किंकिनि कटि अति
रसाल हृदय दीर्घ दुति बिसाल पहिरेतन भीन बसन सोभा स-
रसावैं । श्यामगौर राम लषन भरत अनुज तेही बरन चित हर
हरि रूप सिद्ध मुनिन्ह मन चोरावैं ३ महावीर अवध धाम वि-
चरत जेहि अजिर राम विबुध बहत धन्य धन्य विमल सुयस
गावैं । नित नव आनंद विहार भूपति दसरथ अगर बिथकहिं
सुरसंभु संत भारती सुभावैं ४ । १५ (राग रामकली) सोभा
सीव राम रघुकुलमनि विचरत जानु पानि अँगनाई । अरुन पद
राजीव सम मृदु नूपुर मधुर मुषर सुखदाई १ श्यामतन अति
मृदुल मंजुल किंकिनी कटि अधिक सोहाई । किलकनि नटनि
ललित मनभावति बिहँसनि मुनि चित लेत चोराई २ राजन गोद
लिये उठि भागत किलकारी दै तिभुवन साँई । मातु बोलावन
जात निकट प्रभु नहिं आवत तजि बाल अथाई ३ विविधि वि-
नोद नवल नित हरिके देखत जननी अति हरषाई । महावीर मन
मगन निरंतर ब्रह्मादिक रहे सिद्ध सिहाई ४ । १६ (राग खेमटा)
मुदित लखि जननी बदन निकैआ । प्रेम पुलकि आनंद मगन
मन सादर लेति बलैआ १ सुखमा अमित मुनिन मन मोहत
मदन समूह लजैआ । किलकत चलत धरतपग इत उत तोतरि
बैन सुनैआ २ भीन भँगुलिआ तन अति सोभित विचरत नृप

अँगनैआ । चारिउ सुवन सुभाय मनोहर भाल तिलक रुचिरैआ ३
 लीला ललित बिलोकि सुखी सब लोचन लाहु लुटैआ । महा-
 बीर जन हृदि मानसमें मूरति मधुर बसैआ ४ । १७ (राग ठुम-
 री) चलत छवि छजत किलकि हँसि भजत नूपुर पग बजत नृ-
 पति बारेहो । सुखमा अयन मारमद मोचन बिहँसत इन्दु प्रकास
 सुभग तन लसत आँगन केलि बसत जननि हिय धसत चरित
 सारेहो १ सुरसिरताज राम करुनामयकर सिसु चरित उदार ठु-
 मुक पग धरनि नटनि लरखरनि भजनि मन हरनि मुनिन प्यारे
 हो २ अवलोकत अघ ओघ बिनासत पदनख जोति अपार अ-
 लक केरी भलक रुचिर भाल तिलक निरखि माय ललक पुलक
 भारेहो ३ महाबीर जन देखि मुदित मन लीला ललित बिचारि
 भगत भय हरन विबुध हित करन ललित श्याम बरन सुखद बारे
 हो ४ । १८ (चंचरीक) रामचंद्र चलत बजत नूपुर सुख दनि-
 आँ । लेत जनन्ह चित चोराय अनुपम छवि कहिनजाय सोहत
 अति बाल बदन सुखमा बरखनिआँ १ बोलत प्रिय मधुर बैन ल-
 हत मातु विपुल चैन लालैं हिय हरषभरी दसरथ नृप रनिआँ २
 कोटि मदन सरिस भास सोभा अतिसय प्रकास पुलक प्रेम म-
 गन निरखि रघुवर किल कनिआँ ३ महाबीर मुदित माय आनंद
 नहिं बरनि जाइ भनिन सकहिं संभु सेष बिधिहुकी रनिआँ ४ ।
 १९ (खेमटारागठुमरी) मन हरिलेइ प्यारे तुमरी चलनिआँ छ-
 म छम बाजत पग पैजनिआँ १ किलकनि नटनि ललित लीला
 लखि मुदित मगन मन दसरथ रनिआँ २ चितवनि हँसनि ध-
 सत जन हियमें बोलत मनोहर तोतरी बचनिआँ ३ महाबीर उर
 बसाहिं निरंतर मूरति सुखद मंजु छवि खनिआँ ४ । २० (राग
 बिभास) भे कुमार जब चारोभाई । परिजन जननी नृप सुख-
 दाई । भूपति मुनिवर गेह सिधायो । अवसर जानि चरन
 सिरनायो १ प्रेम प्रसोद हर्ष तनछाये । बहुविनती करि मंदिर
 लाये । कीन्ह जनेऊ गुरहरपाई । अति आनंदन सो कहिजाई २

बिप्र बिप्र तिय जो मन लीन्हा । सतगुन नृप परिपूरणकीन्हा ।
 भूषन बसन बाजि गजभूरी । दीन्हेउ नृप लहि जाचक पूरी ३
 आसिषदेहिं राउमन भायो । नभते देव सुमन वरषायो । बंदी सूत
 बिसद जस गायो । महावीर हरिपद चितलायो ४। २१ (रागराम-
 कली) बिहरत सरयूतीर रामप्रभु भाइन्हसंग बानधनुधारी । बाल
 सखा बहु चहुँदिसि राजित सुखमासीव मदन मनहारी १ भाल
 तिलक सिर चौतनि सुंदर तन अनुहरत बसन दुतिकारी । श्याम
 गौर अभिराम कामप्रद तीनिहुँताप पाप भयहारी २ खेलहिं अ-
 द्रुत खेल मनोहर बिस्मित सुर रहे हृदय विचारी । भाजत कबहुँ
 एक एकन्ह गहि हारत एकदेततारी ३ निरखहिं छवि प्रमुदित
 निसिबासर धन्य अवधवासी नर नारी । महावीर सिसु चरित
 करत जोइ सदा स्वतंत्र ब्रह्म अबिकारी ४। २२ (रागकल्याण) जा-
 गिये कृपाल रामसकल सौभाग्यधाम रजनी अवसानभई जननी
 बलिजाई । दिनकर आगमन जानि उड़गन छवि भई हानि कु-
 मुदिनि सकुचाय रही चकई हरषाई १ अंधकारगे बिलाइ जिमि
 बिमोह ज्ञानपाइ बिकसे सर कंज पुंज मधुकर सुखदाई । पेखनहित
 छवि अपार सचिवभूष भीरद्वार सुफलकरहु सकलनयन बदन
 बिधु देखाई २ कीजे असनान ध्यान देहु द्विजन्ह अन्नदान खाहु
 कछुक तात मधुरब्यंजन समुदाई । उठेकरुणा निधान जननी
 प्रियवचन मानि हरषीं सबमातु कोक जिमि दिनेसपाई ३ परिज
 न हरिछवि निहारि प्रमुदित पुरनरु नारि बरनत जहँ तहँ मुदित
 बदनकी निकाई । महावीर प्रभुहिदेखि जीवन फल सुफल लेखि
 कृपासिंधु दीनबंधु रघुकुल मणिसाँई ४ । २३ जागहु तात मातु
 बलिजाई । भोरुभये खगकूजनलागे बिकसे कंज भ्रमर सुखदाई १
 दीपमंद उड़गन छवि बिरहित सकुचे कुमुद कोक छविछाई । द्वार
 सखा परिजन आये बहु बन्दीबिमल सुयशरहेगाई २ जननीवचन
 सुनतरघुनन्दन उठे तुरत अति हिय हरषाई । सौचक्रियाकरि बा-
 हिर आये देखहिं लोग महा सुखपाई ३ विविधि विनोद अवध

बासी लहि नित नव परमानंद अघाई । महावीर प्रभु चरित क-
 रतहरि भगत बछल सुरनर मुनि साँई ४ । २४ ॥ कोसलपुर
 कौसिक मुनि आये । मिलन हित संग सचिव महिसुर भूप द-
 सरथ बेगि सिधाये १ चरन बाँदि लाये पुनि मंदिर सुभग सिंहास-
 न बैठाये । खोड़स भाँति किये पूजन नृप पँछेउ मुनिवर हेतु सु-
 नाये २ सुनत सकुचि सहमेउ उर राजन मुख मलीनभे अति
 मुरभाये । नाथ राम कहूँ देउँ कवनि विधि जाचन कीन्हेउ अ-
 गम सुभाये ३ प्रान आधार जदपि चारो सुत तदपि राम सब ते
 अधिकाये । महावीर तेहि अवसर कुल गुर विविधि कथा कहि
 नृप समुभाये ४ । २५ ॥ गुर बसिष्ठ जब नृपहि बुभायो । सकु-
 चि भूपति गाधि सुतपद मुदित सीस नवायो १ बोलि रामहिं
 साँपि ऋषिकहुँ मधुर बैन सुनायो । जनक सम मुनि आप इनके
 प्रेमतन अति छायो २ चले मुनि भय हरन रघुवर अनुज संग
 सोहायो । करत विविधि विनोद मग मुनि आश्रमहिं नियरायो ३
 यज्ञरक्षा किये निसिचर नास द्विज सुख पायो । महावीर बिलोकि
 सुरगन नभ निसान बजायो ४ । २६ (होली) मुनि संग सो-
 हत श्री रघुराई । सुखमा मदन समूह लजावन सोभा बरनि न
 जाई । चाप बान बरकरमें राजित पीत बसन छवि छाई । कसे कटि
 तून बनाई १ चलेजात रामानुज कौसिक दुष्ट ताड़का आई ।
 मुनिवर कहे चरित सब ताके मोरेउ बान चढ़ाई । तुरत सुरलोक
 सिधाई २ आश्रम आइ कह्यौ ऋषिसों हरि जज्ञकरहु तुम जाई ।
 आपरहे रक्षाहित तत्पर कर सर चाप सोहाई । विप्र निर्भय पद
 दाई ३ सकल निसिचर नासकरि प्रभु विजय सुंदरिपाई । महा-
 वीर नभ विबुध सराहैं विपुल सुमन बरषाई । हृदय आनंद अ-
 धिकाई ४ । २७ (राग बिलावल) मिथिला नगर जज्ञइक होई ।
 चलहु तात अब देखिय सोई । जनक राज पन सुनि सचु पाये ।
 सब देसन्हके भूपति आये । तुरत सहानुज मुनिवर साथी । चले
 मुदितमन रघुकुल नाथा । महावीर मग लोग अनंदा । लखि प्र-

भु रघुकुल कैरव चंदा २८ मुनि संग सोहत राजकुमार । सोभा
 धाम सुभाय मनोहर निरखि अमित छवि लाजहिंमार १ चरन
 राते कंजसम मृदु जन मन मधुप बसत सुखमार । पीतपट हरि
 अंग महुँ दुति लसत दामिनिके अनुहार २ सुंदर राम लषन तन
 श्यामल गौर बरन सुखमा आगार । उपमा कहूँ तिभुवन नहिं
 पाइय गुन निधि बल अरु तेज अपार ३ मग बासी मन मुदित
 देखि प्रभु पावहिं अभिमत विविधि प्रकार । महावीर गौतम ऋ-
 षि आश्रम पहुँचे हैं रघुवीर उदार ४ । २९ अहिल्या पदरज प-
 रत तरी । गौतम तीय सापवस पतिके उपल देही धरी १ जात
 कौसिक संग रघुवर दृष्टि अवचटपरी । कहेउ मुनिवर चरित तेहि
 कर अमित करुनाकरी २ कृपा कियेउ उदार रघुपति बेगि तेहि
 उद्धरी । दिव्य तनुधरि विपुल अस्तुति मुदितमन अनुसरी ३
 विबुध नभ जै जै भनै नाचहिं हरषि किन्नरी । महावीर दयालता
 लखि सकल आनंदभरी ४ । ३० विश्वामित्र जनकपुर आये ।
 मिथिलाधीस खबरिपाई तब तुरतै मिलने हेतु सिधाये १ लीन्हे
 संग सचिव द्विज परिजन हरषित हृदय प्रेमतन छाये । मुनिवर
 चरन गह्यो अति आदर बिनती कीन्हेउ नृप सचु पाये २ बोलेउ
 बहुरि राउकर जोरे सुखमा अयन सुभाय सोहाये । कोटि मनोज
 सरिस सोभातन जुगल कुँवर काके हैं जाये ३ प्रेम मगन लखि
 जनक गाधिसुत सकल कथा कहिके समुझाये । महावीर मन
 मुदित महीपति गवने सुंदर बास देवाये ४ । ३१ (फाग चौता-
 ल) सुखमा निधान दुइराज कुँवरपुर आये । रामलषन तन श्या-
 म गौर सँग बिस्वामित्र सोहाये । रूप मदन मद हरत महाछवि
 अति मंजुल वेष बनाये १ अवलोकनहित धाम कामतजि पुरबा-
 सी सबधाये । देखि अनूप रूप रघुवरको सब पुलक प्रेमतन छाये २
 पाइ जन्मफल मुदित सराहैं हर्ष हृदय सरसाये । नगर देस वह
 परम सोहावन जहँ बिचरत सदा सुभाये ३ हम सब पुन्य पुंज
 बड़भागी इनको दरसन पाये । महावीर धनु भंग करहिंगे नृप

दसरथजीके जाये ४ । ३२ (लावनी) राह गौतमी मुक्तिदर्ई
 कीन्हेउ मुनिमषकी रखवारी । आये देखन धनुष यज्ञ नृप कुँवर
 जुगल भुजबल भारी । सुना सखी ऋषि यज्ञ निसाचर महाबली
 खल भयकारी । छनमहुँ कटक समेत दुऔजन विनुश्रमतिनकहुँ
 दलिडारी । परम मनोहर बीर धुरंधर पानि कमलसर धनुधारी ।
 श्यामलगौर सुभाय सुहावन कोटि काम छबि बलिहारी । पुर
 आगमन विचारि मुदितमन भई सकल हरषीनारी । आये दे-
 खन धनुष यज्ञनृप० १ जौ विधि विनै सुनै यहमेरी करै कृपा आ-
 रतजानी । रामचंद पति मिलैं जानकिहि अवसि सकलगुन छबि
 खानी । एक कहै राउर अयान अति अगम प्रतिज्ञा हठ ठानी ।
 बिघटे संकर चाप बिना सखि उर किमिकै निश्चय आनी । बोली
 दूजी सुनो सहेली इन्हें गुनोरबि अनुहारी । आये देखन धनुष
 यज्ञ नृप० २ आगे नील कमल तन सुंदर कौसल्या सुतहैं आली ।
 पीछे गौर बरन रामानुज लषन नाम छबि सुखवाली । सुवन सु-
 मित्रा ते कहवावैं प्रीति निपुनहरि सम चाली । बयकिसोर सुर
 मुनि उर भावन तिभुवन पावन बल साली । रूप अनूप सुजन
 मन रंजन खल दल गंजन अविकारी । आये देखन धनुष यज्ञ
 नृप ३ आनंद मगन जनक पुरवासी प्रमुदित नयन लाभ पाई ।
 पुनि पुनि निरखहि लषन राम छबि प्रीति पुनीत हृदय छाई ।
 मनगति रहित सुभाय निरंतर भूरिभाव नहिं कहि जाई । बिबुध
 सिहाहिं सुमन बरषहिं बहु मिथिला नगर सजसगाई । महाबीर
 बिहरत बीथिन्ह प्रभु पुरजन संतत सुखकारी । आये देखन धनुष
 यज्ञ नृप कुँवर जुगल भुज बल भारी ४ । ३३ (राग हुमरी) श्या-
 मली सुरत लियो मनको चोराईरी । देखे बिना मोसे रहियो न-
 जाईरी १ सीस चौतनी परम मनोहर आनन दुति कछु बरनि न
 जाईरी २ पीत बसनवर लसत सुभग तन उपमा तीनिलोक छ-
 बि छाईरी ३ महाबीर ये आपन मानहिं एहि विधि संकर होहिं
 सहाईरी ४ । ३४ (खेमटा) हरि छबि देखैं जनक पुरवासी ।

श्यामगौर तन सुभग मनोहर बदन मयंक प्रभासी १ सोभा लखि
 लखि राजकुँवरकी प्रीति प्रगट उर खासी २ मूरति मंजुलमार ल-
 जावन निरखि बिनोद बिकासी ३ महावीर सुर सिद्ध सराहत
 धन्य नगर सुभ रासी ४ । ३५ रंगभूमि रघुवर छवि छाजताजनु
 समूह उड़गन नृप बिच प्रभु जुगल इन्दु इव विमल बिराजत १
 सीस चौतनी परम मनोहर भाल बिसाल तिलक अति भ्राजत ।
 श्यामगौर सुखमा निधि सुंदर देखत अमित काम दुति लाजत २
 कुंडल लोल कपोल सुभग सुधि आनन इंदु विपुल सुख साजत ।
 देखि अनूप रूप मन मोहित जनक समेत प्रहर्ष सभाजत ३ अ-
 भिमानी नृप जरहिं मनहिं मन संत सुभाव भूप उर राजत । म-
 हावीर रघुवंस विभूषन निरपि निसान नगर बहु बाजत ४ । ३६
 (खेमटा) बोलेउ बंदी सुनो सब राजें । जनक राजपन जो हों
 भाषत वीरबली सिरताजें १ संकर चाप कठोर गरुअ अति भंग
 करै जो आजें २ त्रिजग विजय जुत बरें विदेही होउ कोऊ किन
 लाजें ३ महावीर यह मध्य सभामें सोई महाछवि छाजें ४ । ३७
 (राग रामकली) सुनि चट परिकर कटि कसि छोनिय अभि-
 मानी धनु निकट सिधाये । परम हानि मन मलिन जानि अति
 इष्ट देव तिनके सिरनाये १ तरल तमकि अभिलाष सहित हिय
 हरषित हर पिनाक ढिग आये । बलकरिलगे उठावन बहु विधि
 डगैन कवनिहु भांति डगाये २ फिरे मूढ़मन लजित मनहुँ धनु
 हाथ तेज श्रीसकल गँवाये । भे उपहास जोग सठ सबरे निज
 मतिमंद तासु फल पाये ३ भगत नृपाल मुदित कौतुक लखि
 सादर रामरूप दृगलाये । महावीर तेहि समय जनक उर विपुल
 विषाद सोकुसरसाये ४ । ३८ (रागकेदार) तब मिथिलेस सुरोषि
 कहीहै । मेरेजान भूमि बिन भटको भई प्रतीति लहीहै १ सुनि पन
 देखि सीयछबिकाके उर अभिलाष नहींहै । पैनहिं देनहारबिरचेउ
 विधि चापकठोर महीहै २ जोधादेव नागनरमें जिनकी बड़धाक
 रहीहै । भंजेउ संभु पिनाकपराक्रम सबको आजु सहीहै ३ माँषकरो

जनि अब कोऊभट सबको पूरुषता निबहीहै । महावीरसुनि लषन
लाल भये कोधित फरकत अधर तहीहै ४ । ३९ (दोहा) अरुन
नयन उठिठाढ़भे रामचरन सिरसाखि । बोलेबचन गँभीर अतिसत्य
सहजबल भाखि ४० (रागमारू) कृपासिंधुहों आयसु पावों । तौ
धनुअबहिं खंडखंडन्हकरि महिमहुँ तुरतगिरावों १ लैमेदिनिकंदुक
समान प्रभु लोक लोकमें धावों । अरु मेरुहि सतटूक करों तौ तु-
मरोदासकहावों २ यह सबखेल आप अवलोकैं हों करि सद्यदे-
खावों । कही कठोर बहुत मिथिलापति सोउ संदेह नशावों ३
करहु जोई अनुसासन संभ्रम नेकु न देर लगावों । महावीरजौ
सोइ न करों पुनि करधनु हाथन लावों ४ । ४१ सुनत लषनको
सपथ महाना । भभरे देव भूमि डगमगभै त्रिजग जीव उर संक
समाना १ सकुचे जनक कुटिलनृप डरपे भूपति साधु परमसुख
माना । बैठाये अनुजहि प्रभु सादर बिस्वामित्रसुअँवसरजाना २
आयसु कियेउ धनुष विघटनहित उठेराम अति परमसुजाना ।
गुरुपदबंदि द्विजन्ह सिरनायो हर्ष विषाद न कछु उर आना ३
चले सुभाय अखिल जगस्वामी महिमा सींवतज्ञभगवाना । महा-
वीर तेहिसमय निरखि ब्रवि मुदित देवगन हनहिं निसाना ४ । ४२
जबहिं राम शिवचाप निहारे । पुरजन परिजन नृप बिदेह लखि
हरषित हियभये परम सुखारे १ मनमहँ गुरुपद बंदि कृपानिधि ज-
ननि जनक पुनि सुकृतसँभारे । संभ्रम लिये उठाइ धनुष प्रभु जनु
नभ उए इन्द्र धनुभारे २ जुगलखंड करि भूमि गिरायो काहू न
लख्यो चरित यहसारे । लोक लोकमें सबदगयो अति भ्रमित
बुद्धि सुरहृदय बिचारे ३ भंजेउ संभु सरासन रघुबर समुझिदेव
उर हर्ष अपारे । महावीर सजि सजि निजबाहन आये गगन ब-
जाइ नगारे ४ । ४३ (रागबिलावल) सतानंदको आयसुपाई ।
उठी प्रवीन अली हरषाई । सिय जयमाल प्रभुहि पहिरायो । निरखि
लोग अतिसयसुखपायो १ राममुनीससमीपसिधाये । जनकआइ
पुनि सीसनवाये । आयसुदेह करों सोइनाथा । बोलेहर्षसहित मुनि

नाथा २ भूपति दसरथबेगि बोलाइय । पुनिबिवाहको साज सजा
 इय । तुरतकीन्हसोइराय बिदेह । दूतहिकह्यौबचनसबएहू ३ निज
 पुर मंगल विविधिसजाये । लखि बिभूति बहुधनद लजाये । हाट
 बाट सुरगृह द्विजमंदिर । सबविधि रचे मनोहर सुंदर ४।४४(राग
 सारंग) अनुचर अवधदेखि हरषाने । पहुँचे राजदुआर मुदितमन
 निरखेहरषि प्रेम रससाने १ द्वारपाल दरबारजाइ भूपति प्रति यह
 संदेससुनाये । सुनि हियहर्षि बेगिदसरथनृपतिनकहुँ निजसमीप
 बोलवाये २ करि प्रणाम कछु कही सुखागर बहुरि चरन्ह दीन्ही
 बर पाती।बाँचेउ सुवन प्रेमबस राजन आतुर पत्र लगायोछाती ३
 सभा अनंदभई तेहि अँवसर बहुपट भूषण द्रव्य लुटाये । महावीर
 सुनि अवधनगरमें घर घर मंगलबजत बधाये ४ । ४५ पाइ नि-
 योग रायवर गुरके । भूरिमतंग बाजि अरु पैदल सबविधि बने ब-
 नाव सुघरके १ साजि समान जान सिविका बहु भये तयार लोग
 घर घरके २ संखबजाइ चले नृप गुरजुत भरतादिकन्ह सुभद अँग
 फरके ३ महावीर मग सगुन बिलोकत पहुँचे निकट बिदेह नगर
 के ४।४६ होत जनकपुर परमकोलाहल लखेउ जनेत निकट पुर
 आवत । बहुविधि भूषन बसनसजे सब तुरंग नाग रथ बाहनजा-
 वत १ अगवानी हित चले मुदितमन संख मृदंग निसान बजा-
 वत।जथाजोग हिलि मिलि अतिआदर परमानंद प्रेम तन छावत२
 लेइ आये जनवास बरातिन्ह सुंदरठाम दिये मनभावत । मुनिवर
 राम लषन लखि दसरथ ललकि मिले तन सुधि नहिंतावत ३
 कौसिक चरणगहे पुनि पुनि नृप भूरिभाव अतिसय सुखपावत ।
 महावीरउर पुलक परमलहि सादर बिमल सुजस हरिगावत ४।४७
 (गारी) जेवन आयेहैं राजादसरथसंग सुवन बरचारीजी।सुंदर
 आसन जनक दिये अति दिव्य भानु दुतिकारीजी १ कनककील
 मनि परनबने सुचि परेउ तुरत पनवारीजी।पूजि सुअँवसर जानि
 सुआरन्ह व्यंजन विविधि प्रकारीजी २ परुसनलगे प्रथम सूपो-
 दन गोघृत अरु तरकारीजी । भांति भांति मेवा पकवानै जेवत

लखि सबनारीजी ३ रानि सुनयना अवर सखीबहु देत मधुरधुनि
गारीजी।परिजनसहित भूपहरषतसुनि महाबीरसुखभारीजी४।४८
(गारी) जेवत जानि भूपदसरथजीके जुवतिन्ह गारीगावैं । करत
कूटि सबपुलकभरीं तन बानी बिंग सुनावैं १ दुइ दुइसुवन जुगल
रंगकाहे भूपति भेद बतावैं । कीरनिवासन्ह भोर परचौहैं कै अव-
रन ढिग जावैं २ फुर फुरमरम राउ यहभाषैं सत्यसंध कहवावैं ।
हरषितराय सजाति लोग सुनि हृदय महासुखपावैं ३ तेहि छन
जनक भवनकी सुखमा देखि धनेस लजावैं । महाबीर वह सुख
बरनतकी सारद मन सकुचावैं ४ । ४६ सोहैं अति राज कुँवर
ब्याह साज सजेहैं । मानो बहुवेषकाम धरेदुतिन्ह मजे हैं १ तिन
महुँ श्रीरामचन्द्र अतिसय छबि छजेहैं । पेशिके अनूपरूप मार
कोटिलजेहैं २ पुष्पमाल जालबदन सीस गौर रजेहैं । तुरंगन्ह
सवार बिपुल सुखमा तन गँजेहैं ३ कुल गुर व्यवहारद्वार सकल
भांति कियेहैं । महाबीर रायभूरि दान द्विजन्ह दियेहैं ४ । ५०
विस्मित लखि देव हृदय मंडप शोभाघनी । दुलहिनि जग
जननि जहां दूलह तिभुवन धनी १ मणिमय सबखंभ रचे
अतिसय सुखमा सनी । प्रतिमा बिरचे अनूप पचि पचि हीरन
कनी २ तोरन महुँ सुक्तमाल अनुपम उपमाबनी । मानहुँ छबि
खानि बिपुल अद्भुत प्रगटे गुनी ३ सहस कोटि संभु सेष
सारदा चहैं भनी । महाबीर दास तौन पार पाइहैंतनी ४ । ५१
(मंगलछंद) मंगलमूल लगन सुभ जब चलिआयेहु । गुरजन
आयसुपाइ कुँवर बोलवायेहु । सादर पूजेहु चरन दिएउ सिंहासन।
बैठेउ चारिउ कुँवर हरषि प्रमुदित मन । श्याम अंगपट पिंगभूरि
छबिछाजत । देखि मनोहर वेष मदन मन लाजत । दुइदुइ नील
गौर तन सुंदर सोहत । सुदित जनकपुर लोग बदन बिधु जोहत
५२ तिभुवन कहूँ उपमा नहिं जो कछुदेइय । हारि गिरागइ हेरि
इन्हैं समइय । दोउकुलगुर कुलरीति बेदविधि कीन्हेउ । जनक
राजतब दान सुताकर दीन्हेउ । सो आनन्द उछाह कवनि विधि

गाइय । होइ सहससत सेषतौ पारन पाइय । देवन्ह चारिउ बेददेह
 धरि आयेउ । कहेउ विवाह विधान तथा करवायेउ ५३ भांवरि
 फिरत कुंवरि सँग अद्भुत छविभइ । मनि खंभन्ह प्रतिबिंब अनूप
 छटाछइ । जनुरति मनसिज विपुल दरसहित आवत । सकुचत
 गुनि निजरूप बहुरि दुरिजावत । देखिदेव पुरलोग भूपदोउ पुल-
 कित । पुनिपुनि निरषहिं सादर अतिमन हरषित । लेइकर अरुन
 पराग पुरोहित भाषेउ । राम सहानुज हरषि कुंवरि सिर राखेउ ।
 लौकिक बैदिक रीतिकिये सबसादर । कुंवर कुंवरि पुनि गवनेउ
 जेहिघर कोहवर । जनवासेहि तबराउ बरातिन्ह आयेउ । महा-
 बीर मन मुदित सुजस यह गायेउ ५४ पूजहु लाल तुम्हारिहैं दे-
 बी । अवध नगरसे हम बोलवायो राउर कुलकी सेबी १ बोले
 रघुवर मृदु मुसुकातैं बानी मधुर फरेबी २ हमरे घरहैं देव कटीले
 चहौ मगाइनलेबी ३ महाबीर रनिवास हास बस लहि आनंद
 अजगेबी ४ । ५५ कैहोलाल कौन यह रीती । तुम्हरे नगर सुने
 जुबतिन्हको ऐसी है परतीती १ पुत्र जनै सब पीर खाइके सो
 तुमहूँ परबीती २ हमरे मातु पिताते जनमतबेद विहितहै नीती ३
 महाबीर महि जनत तुम्हारे अति अद्भुतकी गीती ४ । ५६ प्रमुदित
 अली प्रेम रसपार्गी । सुखमा धामराम चहुँभाइन्ह निरखि निरखि
 छवि अति अनुरागी १ विपुल अनंद हृदय सरसान्यौ सुत वित
 देह विराग विरागी २ बिदा मागि रघुनाथ अनुज जुत चले वियोग
 दुसहदवदागी ३ महाबीर हरि अंतर गुनिउर समुभक्त आपुहि
 परम अभागी ४ । ५७ (दोहा) नितप्रति होत पहुनई मिथि-
 लापतिके भौन । परमानंद मगन मन सबकहूँ भूलेहुगौन ५८
 कलुक देवस बीते इमि दसरथ जनक बोलाइ । बिदाहेतु सुनि
 जनकनृप दाइज दियो सजाइ ५९ जनकराय करजोरि कहीहै ।
 आप धनेसरंकहौं दिनकर हौहौं उड़प समान सहीहै १ तुम्हरे
 देबे जोग महाशय मेरे भवन भंडार नहींहै । छमब दीठता मोरि
 कृपाकरि बहुविधि जनकी विनय यहीहै २ जद्यपि दाइज भूरि

दियोनृप कंचन हीरन रासि छहीहै । तदपि नम्र विनती सुनि
 दसरथ उर संतोष समूह लहीहै ३ बिदाहोत तेहि समय भूप के
 करुनारस अति छयो महीहै । महावीर जानकी चलत रनिवास
 बिषाद निमग्नि रहीहै ४ । ६० मुदित बरातदूरि कछु आई । देखि
 परचौ बहुरज नभ संकुल तरिवर हलत पवन समुदाई १ कठिन
 भयावन सब्द होत सुनि लोग हृदय रहे अति घबड़ाई । भूपति
 लखे परसुधर आये द्विज बिचारि मनगे मुरभाई २ चापवान कर
 कंधपरसु लिय मुनिवर बेष महाछवि छाई । क्रोधितहरिसन बचन
 कहे कछु जानि प्रभाव हृदय सकुचाई ३ दैसारंग प्रनाम किए
 पुनि गवने बन तपहित हरषाई । महावीर सब लोग खुसी भये
 परमानंद बिषाद बिहाई ४ । ६१ अवध प्रवेश जनेतभईहै । रांनिन्ह
 सुंदर सजिसजि मंगल परिछन चलीं बिनोद छईहै १ परिछि
 मुदित मन पूत पतोहू सादर भवन लेवाइ गईहै । पाहुन बिदा
 भये गवने घर गुनगन कहत बिभूति मईहै २ कौसिक चलतभूरि
 करुनाभइ नृप बंदे आसोस दईहै । गवने मुनि प्रभु आयसु सिर
 धरि पुनि पुनि सुमिरत हरि बिजई है ३ नगर परम आनंद लोग
 अति प्रति दिन संभव हर्षनईहै । महावीर सुंदर जस गावत क-
 रुना सिंधु राम बिनईहै ४ । ६२ पुलकि तन आरतीकरै मैआ । निर-
 खिमनोहर कुंवर कुंवरि छवि बहुविधि लेति बलैआ १ वारत
 भूषनद्रव्य भूरि पट मुदित बिलोकि निकैआ २ संभुप्रसाद अ-
 नुग्रह मुनिके तात बिजय बड़िपैआ ३ महावीर आनंद मगन मन
 रघुवर सुजस कहैआ ४ । ६३ ॥

इति श्रीगीतरामायणे बालकांडे महावीरदासविरचितं
 सम्पूर्णम् शुभ ॥

अथ अयोध्याकाण्डप्रारम्भः ॥

(रागरामकली) गुरु बसिष्ठके गेह जाइ परिपाइ भूप इमि
बैन उचारे । तुम्हरी कृपा अनुग्रह हरिके सब पूजे अभिलाषहमारे
१ एक लालसाहै भारी अति आयसु देहुनाथ अबसोई । करहु
बेगि अभिषेक रामको पुरवासी मन चाहत जोई २ देखौं यह उ-
छाह भरि लोचन बहुरि न सोच प्रान तन त्यागे । परेउ चरन
कहिराउ विविधि विधि मुनिवर सुनत अधिक अनुरागे ३ सजहु
साज जनिदेर करहु नृप जौ करतार हृदय यह भाउब । महा-
बीर तौ रामचंद्रकहुं सिंहासन आसीन कराउब ४ । १ । ६४
मंगल साज सजत सब घरघर सुनि सीता पतिको अभिषेकू ।
चेरि मंथरा हृदय दुसह दुख देखि कुटिल मति तर्क अनेकू १ के-
कय सुता समीपजाइ पापिनि प्रपंच रचिपाचि बहकायो । रानि
बचन फुरमानि कुपित मन बेगि कोप गृह बीच सिधायो २ होत
नगर राउररचना अति लोग मुदित आनंद मगनमन । रानिकु-
चाल जान नहिं कोऊ चाहति बिषम बिषाद सरसगन ३ निसा
प्रवेस भूप हरषित मन गवन केकई गेह कियो है । महाबीर सुनि
कोप भवन नृप सहमि सकुचि परिताप हियोहै ४ । २ । ६५ कहहु
प्रिये यह कोप कियो किमि । अमर नागनरमें रिपु तवकोउ कहा
वियो भाषहु संभ्रम तिमि १ रावहि रंकरंक पद भूपति राम सपथ
सत जौन करों इमि २ भूषन लेहु उठहु हरषित मन होइहि अ-
वसि प्रिया कहिहौ जिमि ३ महाबीर लखि परत मनहुं खलु भूप
कंज हित प्रगट भई हिमि ४ । ३ । ६६ जब भूपति हरि सपथकरी
है।टढ़करि बचन उठी पट भूषन सजति अंग उरहर्ष भरीहै १ बोली
नाथ प्रथम वर भरतहि राज बहुरि रामहिं बनबासू । सुनतराय

उर सहमि सुखिगये अतिविषाद तनभयेउ हरासू २ मूर्छिपरेमहि
 सुधिनरही कछु जनुसरोज तरु दामिनि गंजेउ । विषम विषाद
 कहिय कवनीविधि फरत देवतरु करिनि बिभंजेउ ३ भोर सुमंत्र
 अवार जानिगये राउर देखिब्यथा तनभारे । महावीर तब सचिव
 बिकलहैजाइ रामप्रति दुखित उचारे ४ । ४ । ६७ सुनत राम भू-
 पति ढिगआये । राउ बिसोक मगननहिं सुधि कछु कैकेई कहि
 सकल सुनाये १ जननी बचन सीसधरि प्रभु अतिसरल हृदय
 सर्वज्ञ सुजाना । बिदाहोन कौसल्या मंदिर गवने कृपासिंधु भग-
 वाना २ प्रभुहिदेखि हरषित उठिधाई परमानंद मगनमन माता ।
 प्रान निष्ठावरिकरि पुनिबोलीं खाहु मधुर ब्यंजन कछुताता ३
 जननी जनक कथा भाषेउ हरिभूरि बिकलभइ निपट दुखारी ।
 महावीर रघुनाथ गवन गुनि कछु न सकति कहि संकट भारी ४
 ५ । ६८ (खेमटा) रघुवर केहिबिधि राखौप्राना । बचन बियोग
 सुनत यह तुमरो चाहत करन पयाना १ दारुन बिपति प्रजा दुख
 पइहै पुर अति अदिन समाना २ का अपराध भयो सुत तुमते
 भूप कहेउ बनजाना ३ महावीरबिनु अवध भयावन प्रेत निके
 त मसाना ४ । ६ । ६९ रघुवरहै बन घोर भयावन । कठिन
 राह अपार सरि गिरि स्वर्ग मृग विपुल डरावन १ कोल कि-
 रात सवरजन पावर निरपत भय उपजावन २ गहन कलेश
 अमित दारुन अति समुझत हिय दरकावन ३ महावीर यह मृदुल
 चरनते किमि चलिहौ मगतावन ४ । ७ । ७० हरिजू कैसे धरौं जिय
 धीरा । तुम सुत जान कहतहौ बनको सुनि उपजत मन पीरा १
 छांड़ि समाज राज परिजन सुख लेइहौ बलकल चीरा २ पापिनि
 जानि त्यागि जननी जड़ बिपिनि चलेउ रघुवीरा ३ महावीर अ-
 बलम्ब देहु कछु नाहित तजव शरीरा ४ । ८ । ७१ (छंदहरिगीतिका)
 जननिहिं बिकल हरि देखि करुनासिन्धु बहु धीरज दियो । किय
 बिबिधि बिधि परितोष सादर प्रेम परिपूरन हियो ॥ जानकी
 दुखित विलोकि लीन्हेउ संग प्रभु हरषीं महा । पनि बिदा हेतु

कृपाल रघुवर मातु पद पंकज गहा १। ७२ मातहि बहु प्रबोधि
 रघुराई । चले समीय मिले मग लछिमनगहेउ चरन अकुलाई १
 मोकहुँ जनि त्यागहु रघुकुलमनि कहत वचन विलपाई । कृपा
 सिन्धु आरतजनरक्षक दीनबन्धु सुरसाई २ देखि हेतु करुणानिधि
 अनुजहि संग लिये हरपाई । समाचार सुनि अवध नगर विच
 भूरि शोक रह्यो छाई ३ सोचत पुरुष नारि सब घरघर का सुनि
 काह देखाई । महावीर अति विषम दुसह दुख परेउ अचानक
 आई ४। १०। ७३ अवधमें हों रहिहों केहि काम । जौ पै राम लपन
 अरु सीता जातबनहिं तजि धाम १ हमहुँ जाब हरि संग जैहें जहें
 तहई रहे अभिराम २ भवन मसान लोग यम किंकर नगर दुखद
 बिनु राम ३ महावीर इमि पुरवासी सब बिलपत लखि विधि
 बाम ४। ११। ७४ तौ लागि हरि पितु मन्दिर आये । नृपहि सचिव
 उठाइ बैठाये रामागमन कहे समुभाये १ सुनि सचेत है ललकि
 महीपति अति प्रिय रामहिं हृदय लगाये । मुदित भये जनु पाइ
 परी निधि प्रेमवारि रघुवर अन्हवाये २ कहि न सकत दुबिधा विच
 संकट रहौ कि जाहु सोक सरसाये । प्रभु सर्वज्ञ बिदा उठि मांग्यो
 राउ प्रीति बश गहि बैठाये ३ कैकेई तब तमकि उठी भाजन मुनि
 पट हरि निकट लिआये । महावीर जननी रुख लखि चट उठे
 राम नृप अति दुख पाये ४। १२। ७५ पितु पद सिर धरि राम कृ-
 पाल । चले बनहिं प्रभु अनुज सीय युत करि पुरलोग बेहाल १
 राउ विकल तन दशा भुलानी दुःख मगनमन होत । भूरिविलाप
 रानि सवरोवति नगर विषाद निसोत २ कैकय सुता हर्ष ऐसेहु
 महुँ बज्र अवधपुर पारि । मनहुँ अगिनि बनलाइ किरातिनि प्र-
 मुदित रहीनिहारि ३ चरन बंदिगुरभार सौं पि सब पुरजन तोषदि-
 यो । महावीर रघुवंस विभूषन विपिनि पयान कियो ४। १३। ७६
 धायेलोग रामसंगलागे । कोउ न कहहिं घरहहु रहब सब रघुवर
 बिरह दुसह दब दागे १ रामराम आरतहै भाषत बिलपित मन क-
 रुना रसपागे २ समुभाये प्रभु विविधि भाँति नहिं फिरहिं लोग

अतिसय अनुरागे ३ महावीर हरिचरन कमल लागि तृनसम वि-
षय भोग सुखत्यागे ४ । १४ । ७७ तमसा तीर निवास कियो ।
लोग श्रमित सुर कृत मायावस निद्रा बिससभयो १ अर्द्धनिसा
रघुनन्दन जागे सचिव बोलाइ कह्यौ । खोज दुराडगये रघुकुलमनि
नहिं पहिचान रह्यौ २ भोरभये नरनारि दुखित अतिखोजत रथ वि-
लषाइ । पुरआये रोदतबहु बिलपत जनु सरबस डहकाइ ३ पहुँचे
शृंगवेरपुर रघुवर अनुजसूत सियसंग । महावीर हरषे प्रभु निरपत
सुरसरि विमल तरंग ४।१५।७८ (छंदह० गी०) सुनि सुदितकेवट
राजधायो मगन मनपुलकित महा । अति परमप्रीति पुनीतसादर
रामपद पंकजगहा । रामानुजहि जग जननि बंदेउ भावलखि रघु
कुलमनी । भेटेउ कृपाकर अंकभरि नभ सुरन्ह जैजैजैमनी १६।७९
(बरवाछंद) नहिं कृपाल रघुपति सम तिभुवन मांह । लाग असौच
जासु तन परसत छांह ॥ भेटेउ सादर ताहि स्वकंठ लगाइ । देखि
प्रीति कै रीति रहे सुर सिद्ध सिहाइ १७ । ८० (छन्द) सिहाइ
सिद्ध सुरेस मन महँ गुह सुभाग सराहहीं । तेहि नगर परमानंद
माच्यौ प्रभुहि लखि सुख पावहीं ॥ निसि विगत रघुवर अनुज
सियजुत देवसरि तट आयेऊ । केवट लिआयो नाव बैठे सुदित
पार चलायेऊ १८ । ८१ (बरवाछन्द) लखिसुमंत्र भये व्याकुल
निपट निरासासाचेहु अव प्रभु करिहैं गहन निवास ॥ बहु विला-
पकरि अवनि परेउ भइँआइ । सचिव विषाद दसा अति किमि
कहि जाइ १९ । ८२ (रागकल्यान) चले रघुवंस तिलक सीय
लषण सहित पुलकि संग गुहा निरखि विबुधसुमन माल बरष-
त । सोहत कर चापवान सुखमा सुभगुन निधान देखत पुरग्राम
नगर तीय पुरुष हरषत १ श्याम गौर सुभग अंग लाजें लखि
छवि अनंग पेषहु सखि सुतिय संग जात कहा कोहैं । जटाजूट
सीसलसे कटि पट मुनि चीरकसे रूप दृगन आइ बसे सहजहिं
मन मोहैं २ तिभुवन सुर मनुज नाग जहँलौ सोभाविभाग सुने
गने समसरि कहँ कौन है विचारे । उपमा को कहिय आन इन

के सम एइ महान आली जिव ब्रह्म अजाजनु सरीर धारो ३ एहि
 विधि मग लोग कहत लोयन फल मुदित लहत सीतापति विसद
 सुजस पुलकित तनगाते । महावीर भाव भूरि भलीभांति प्रेमपूरि
 लगे साथ लोगदूरि किये गेहनाते ४।२० । ८३ आलीहैं अमीरके
 जाये । श्याम गौरतन भामिनि सुंदरि रूपअनूप सोहाये १ बोली
 एक सुनाइमि सजनी जरठन्ह भेद बताये । अवध नृपति दसरथ
 सुत दोऊसील सुभग छविछाये २ पितावचन धरि सीस जात बन
 जुगल बीर सचु पाये । पति पद प्रीति पुनीत जनकजा चलति
 संग मन लाये ३ एरी मातु पिता कैसे हैं जे बन इन्है पठाये । म-
 हावीर ए दृगन बसहिं तौ तहों कठोर सुभाये ४ । २१ । ८४
 (राग भैरवी) सजनी हैं कोउ जुगल अमीर । संग सुकुमारि
 लिये मग पयदल जात कहाँ दोउ बीर १ श्याम गौर तन सु-
 भग मनोहर सोहत कर धनु तीर । जेहि देखत हम सब उर कर-
 कत जानित विषाद अधीर २ मातु पिता सखि परम निठुर अति
 जानि परत बेपीर । ऐसो सुवन गहन पठयो जिन दरद न कियो
 सरीर ३ सोचति मग बासी तिय सवरी नयनन ढरकत नीर । म-
 हावीर ऐसे तन सुंदर पहिरे हैं बलकल चीर ४ । २२ । ८५ (राग
 सोरठ) सखि लखु श्याम गोरे गात । भामिनी संग परम सुंदरि
 छवि समूह लखात १ पिता बचन प्रमान हित अति सहत हिमि
 तप बात । बान धनु कर रुचिर राजत विपिन निवसन जात २
 रूप अद्भुत हरत मुनि मन चरन जनु जलजात । कहति एक
 कोउ भेद सबरो सुनत तिय बिलषात ३ दुसह विषम बियोग भव
 दुख सहत किमि पितुमात । महावीर सुभाय मृदु पद चलत महि
 सकुचात ४ । २३ । ८६ आये रघुवर निकट प्रयाग । करिप्रनाम
 बिलोकि बेनी उमग उर अनुराग १ न्हाइ विधिवत अनुज सिय
 प्रभु सखा संग लगाइ । चले मुनिवर निकट रघुपति हृदय अति
 सुख पाइ २ मिले पद गहि कुसल पूछेउ कही राम सुजान । मु-
 दित ऋषि पूजे जथा विधि किये बहु सनमान ३ बिदा मांगि

बहोरि आगे गवन श्री हरि कीन्ह । महावीर बिलोकि पुर नर
नारि दृग फल लीन्ह ४ । २४ । ८७ उतरे भानु सुता रघुनाथ ।
पहुँचे चित्रकूट प्रभु लल्लिमन सीय सषा वर साथ १ मुनिवर क-
हेउ ठाउँ केवट सुचि बिचेउ, पर्न कुटीर । अनुज जानकी सहित
सुभाश्रम बास कियो रघुवीर २ पाइ निषाद रजाइ रामको फिरि
आयो निज औन । सुमिरत गुन गन कृपा सिंधु कर मगन रहे
दिन रैन ३ बिंधि महातम हिमि सुमेर गिरि दोन आदि रहे
गाइ । महावीर जहँ सुर मुनि नायक रामचन्द्र रहेछाई ४ । २५ ।
८८ (चंचरीक) देव वृन्द चित्रकूट महिमा रहे गाई । राजत र-
घुवंस वीर सीय संग लषन धीर कीन्हे वर दल कुटीर अतिसय
छवि छाई । बिंधि अधिक मन उछाह गौरव बिनु श्रमहिं लाह
पाइ हर्ष हृदय माह प्रमुदित सुख पाई । तिभुवन तेहि सम महान
देखिय नहिं अपर आन निवसे रघुवर सुजान जहाँ चितुलगाई ।
महावीर विष्णु धाम आदि विमल स्वच्छ ठाम कहत धन्य मुदित
सैल श्रेष्ठता सुहाई २६ । ८९ लै रथ दुखित सूत पुर आवत ।
अति विषाद बस बाजि सहित सो दसा कहत कबि उर दुख पा-
वत । को मैं कहौं जात केहि कारन व्यथित विशेष बिरह तन
तावत । बिनु हरि विकल बिलाप बिबिधि बिधि करत सुनत क-
रुना उपजावत । महावीर जेहि मग बासी सब व्याकुल भयेउ
लखेउ जन जावत २७ । ९० (बरवाछं०) आयेउ अवध सुमंत्र
भये अँधियार । राज भवन तब गयउ राखि रथ द्वार । भूपति बि-
कल देखि जय जीव मनाइ । बैठ जगे नृप बोले अति बिलपाइ ।
कहहु बेगि कहँ राम लषन सिय तात । गये तुम्हैं तजि कै आये
दोउ भ्रात । बहु बिधि सचिव प्रबोधि कहे नृप पाहिं । सत्य संध
रघुकुल मनि दृढ़ व्रत आहिं २८ । ९१ नाथ राम संदेस कहीहै ।
तुम्हरे पुन्य प्रभाव सदा बन दुखके लेस नहीं है १ तात मातु
जनि सोचु करैं कछु मेरो नेकु सही है । आयसु पालि बेगि अ-
इहाँ घर अवधि अंत जवहीं है २ कहेउ भरतते करहिं राज पद

नीति समेत लही है । पिता दत्त माता संमत पुनि मम सिष
 अवसि यही है ३ राउ बिकल अति राम गवन सुनि तलफत
 गिरेउ मही है । महावीर भै पीरनई उर करुना छाड़ रही है ४ ।
 २९ । १२ राम विरह भरि भूपति तलफत । राम राम हा राम
 राम कहि हाय सुवन पीतम बिछुरे कत । प्रान तज्यौ रनि-
 वास लख्यौ सब रोवत कै करुना अति बिलपत । नगर को-
 लाहल भयेउ भयावन जो जहँ सुनत धुनत सिरसो तत । म-
 हावीर राउर गुर आये दिय प्रबोध किय दूरि बिथा जत ३० ।
 ६३ सानुजभरत बसिष्ठ बोलाये । मातु पिता गृह रहे कुँवर अति
 बेग सुनत कोसलपुर आये १ देखि नगर नर नारि भयावन मन
 मारे जनु निधि डहकाये । जननी भवन गये नृप सुरपुर गवन
 सुने करुना उर छाये २ हा पितु हा पितु हाय हाय कहि बिल-
 पत भरत अधिक दुख पाये । राम गवन ज्यौँकह्यौ बिकल अति
 मनहुँ घायपर लोन चलाये ३ परेउ अवनि सिर धुनत हाय ज-
 ननी हरिसेतैं भिन्न कराये । महावीर प्रभु त्यागि मातु गृह कौ-
 सल्या के भवन सिधाये ४ । ३१ । ६४ मातु सुतहि धीरज बहु दी-
 न्ही । जनक दाह दसगात जथावत सादर भरत सकल विधि
 कीन्ही १ सुद्धभये गुरराज तिलक हित कहेउ निषेध किये विधि
 एक । भोरहि चलौ जहां रघुकुल मनि तिन्हकर करहु तहैं अ-
 भिषेकू २ लैसंग मातु प्रजा परिजनसब गुरु समेत किये भरत
 पयाना । दिन अरु रैन चलत मग पैदल तीरथ पति आये
 भगवाना ३ संभ्रम न्हाइ चले अति आतुर गिरिवर चित्रकूट नि-
 अराने । महावीर लाखि भीर लपन मन क्रोध भयो रघुवर सन-
 माने ४ । ३२ । १५ निरखि सैल मन अति अनुरागू । भरत दसा
 लाखि सिद्ध महा मुनि बिथके ज्ञान विराग विरागू १ करत प्रनाम
 चले हरि पद जहँ परेउ नयन सोइ मलत परागू २ अगम सनेह
 कहे नहि आवत भनिन सकैं सारद अरु नागू ३ महावीर जनु
 प्रेम कलेवर सद्यलखत तिनको बड़भागू ४ । ३३ । १६ भरत

प्रनाम करत लाखि रघुवर । प्रेम अधीर उठे तन सुधिनहिं भेटेउ
 धाइ सुप्रीति अंकभर १ सेषगिरा कहँ अगम प्रीति वह कहिन
 सकहिं जेते कवि मुनिवर । मिले राम गुर लोग मातु सब छन
 महँ जथा जोग अति आदर २ अनुज जानकी सहित पुलक
 मन मगन देखि सुरपुर भय खरभर । कियो विबुध गुर तोष विविधि
 विधि जनि अकुलाहु नहीं तुम कहँ डर ३ भूप मरन सुनि लषण
 सीय प्रभु दुखित भयेउ यद्यपि सुखसागर । महावीर हरिभगत ब-
 छल करि कृपा तिलांजलि न्हाइ किये वर ४।३४। ९७ बैठे सभा
 लोग सब आई । भरत खड़ेहै करि प्रनाम भाषत विलपित मन
 उर सकुचाई १ स्वामि विमुख जननी करवायेउहौं अति अधम
 सिरोमनि साई । जेहिलगि आपु वसत बन दुख सहिमोसे अधि-
 क पतित को भाई २ आयेउँ सरन हेरि अपनी दिसि जो कछु
 कृपा करहु रघुराई । बोलौंकेहि आनन तुमसे प्रभु अघ ओघन
 तेरहेउँ अघाई ३ दीन बचन सुनि प्रभु करुना निधि बोले सत्य
 बचन सुखदाई । महावीर जोइ कहहु करौं सोइ भइया अवसि ज-
 नक की दोहाई ४ । ३५ । ९८ देखि भरत स्वामी अनुकूल ।
 अपभयत्रास तर्क नाना विधि मिटी सकल मनकलपित सूल १
 अब प्रभुजोइ आज्ञा करि दीजै परम धर्म करिबोहै मोर । निज
 पन तजिमम पन राखेउ प्रभु अबरहिगो का और २ पालहु प्र-
 जहि अवधि बीते तुम्हैं आइ मिलब हौं तात । सिषधरि सीस
 पाडुकालै संग लोग प्रजा गुर मात ३ आये अवध पांवरी पूजत
 नितनव प्रीति बढाइ । महावीर जप तप पुरवासी करत सदा लय
 लाइ ४ । ३६ । ९९ (रागवसंत) बैठे प्रभु सोहत चित्रकूट ।
 अज्ञान हरन कल्याण बूट । करैं कौतुक नाना विधि रसाल । सुर
 मुनि मन रज्जन प्रनतपाल १ सुरपतिसुत उर कछु भेद आनि ।
 हैं ब्रह्म नहीं कोउ जीव खानि । बायस तनु धरि अनुचित विचार ।
 करि चलयौ हृदय अहमिति अपार २ प्रेरे रघुनंदन ब्रह्म
 ज्ञान । भज्यौ काल सरिस लाखि अतिडेगान । पितुलोक

चतुर्दश भुवनधाइ । गयो नहिं कोऊ लीन्हो अपनाइ ३ प्रभु
चरन आइ पर्यौ करि पुकार । सरनागत आरत हरु उदार ।
सुनि महावीर प्रभु दीन बैन । अघ माफ किये करि एक
नैन ४ । ३७ । १०० ॥ इति श्रीगीतरामायणे अयोध्याकांडे महा-
वीरदासविरचितं सम्पूर्णम् ॥

अथ आरण्यकाण्डप्रारम्भः ॥

(चञ्चरीक) पञ्चवटी आइ बसे सीता रघुराई । विक्रम
भुज बल विसाल दुष्टन उर करन साल रञ्जन सुर मुनि
कृपाल भगतन्ह सुखदाई १ श्याम गौर जुगल भ्रात पीत
वरन जगत मात विपुल मार लखि सिहात सोभा अधिकार ।
बिहरत बन चहुँ ओर सूपनखा नारि घोर निरखे दोऊ किसोर
मोहित है धाई २ बोली हरि निकट आइ सुंदर छल तन बनाइ
छैल बेगि करु सहाइ हों मनोज ताई । बिना ब्याह उमिर थोर
तुमसे मन बसत मोर लेहु बेगि नात जोर भाषत मुसुकाई ३ हैं
कुमार तन बिभास गवनै मम अनुज पास रामानुज जानि हास
पलटि कै पठाई । इत उत खलु भेद जानि निज बपु धरि क्रोध
आनि अतिसय खिसिआनि रामचन्द्र निकट आई ४ । १ । १०१ ।
अनुजहि हरि करि सैन बुझायो । अँगुरिन चारि बहुरि नभ खं-
डन लषन भेद सब पायो १ उठे बेगि तेहि नाक कान बिनु किये
बीर हरषायो २ खर दूषन पहुँ गई निशाचरि सबरो भेद बतायो ३
महावीर सुनि ते सब दल लै लड़न हेतु चढ़ि धायो ४ । २ ।
१०२ (लावनी) सुनि खर दूषन त्रिसिरादि सैन लै डंका तुरत
बजाया । सबके कोप हृदय छाया । सूल सेल असि तोमर

मुद्गर परिघ पखानलिये । मारुमारुधरुधरुकरते अतिढिग आइ
गये । मोह्यौ प्रभु अनूप छवि देखि । ठाढ़ रहे कछु करि न सकत
खल विथकित भये बिसेखि १ बोल्यौ नारि दुराइ प्रगटकरि दी-
जे हमै निकार । जाहु कुसल घरनहिं करिहौं हौं कछु तुमसे त-
करार । सुनत रघुवीर कहे मुसुकाइ । कादरको व्यवहार देखावत
निर्लज रनपर आइ २ सुनि उरजरि सब एकबार आयुध प्रभु पै
डारे । खंड खंड करिराम महाबल व्यर्थ कियेसारे । बहुरि प्रभु नि-
जसर संधान्यौ । चले विपुल नाराच काल जिमि निश्चर अकु-
लान्यौ ३ सीस चरन भुज कटत गिरत महि पुनि उठिके लड़ते ।
सभय देव लखि चरित भयावन उर अतिसय डरते । कियो तन
कोप राम भारी । पुनि पुनि दलत बढ़त खल सबरे सुर मुनि दुख
कारी ४ बर प्रमान हित कौतुक किय हरि मति भ्रम सकल भई ।
एक एकको राम लखैं इमि आपुहि आपु हई । मरे लखि देव सु-
खी भयऊ । महावीर बहु सुमन बरषि निज निज लोकै गयऊ ३ ।
१०३ (राग बिभास) समाचार रावन यह पावा । लै मारीच
संग खल धावा । कपट कुंग भयो मारीचा । आपु दुरावन अति
मति नीचा १ बैदेही बिलोकि मृग सुंदर । कहेउ चर्म आनहुँ प्रभु
एहिकर । भगत बछल सर्वज्ञ सुजाना । धनुसर साजि चले भग-
वाना २ भाग्यौ हरिन राम प्रभु धाये । कौतुकनिधि कृपाल सचु
पाये । दूरिगये तब तकि सरमारा । गिरत ऊँच स्वर लषन पुका-
रा ३ राम राम पुनि मनमहँ कीन्हे । निज गति दीन्ह प्रीति उर
चीन्हे । सुमन बरषि जैदेव मनाये । महावीर सुनि लछिमन आ-
ये ४ । ४ । १०४ (राग रामकली) जतीरूप रावन खल कीन्हो
मांगत भीखि सीय ढिग जाई । ग्रहन करों नहिं बँधो दान तब
लेब देहु जौं बाहिर आई १ नीति प्रीतिको कथा कहत सठ सुनि
सरोष सिय बैन उचारे । अहौ जतीपर बचन दुष्ट इव बोलहु श्रुति
विरुद्ध किमिसारे २ तब दससीस स्वरूप प्रगटकिय रावन नाम
कहेउ सुनि सीता । चौंकि उठी खल रथ बैठायो गगन पंथ चलयौ

आतुर भीता ३ विविधि विलाप करति रोदति नभ जाति बधिक
 बस मानहुँ गाई । महावीर सुनि जीव चराचर बिकल भये अति
 कछु न बसाई ४ । ५ । १०५ नभपथ देख्यौ सीय जटाई । रामराम
 हा राम कहति अति विलपति विपति सुनाई १ धायोबेगि समन
 सम भाषत रे तस्कर खलसाई । ठाढ़रहै अब जाइ कहाँ तव काल
 गयो निअराई २ चोंचनमारि भंग तन कीन्हेसि गिरा अवनि
 अकुलाई । उठिसकाप करबालकठिनलै कोटिसिपर खिसिआई ३
 लंकजाइ करि कोटि जतनसठ हारि परासमुभाई । महावीर तबबन
 असोक बिच थापेउ पहर कराई ४ । ६ । १०६ रघुवर सिय बिहीन
 थल देखि । प्रभुसर्वज्ञ दनुज मोहन हित प्रगटे जाल बिसेखि १
 भूरिविकल ह्वै तरु साधनसे पूँछतचलेहवाल । हा सिय कितैगई
 तजि आश्रम तो बिनु भयेउँ बेहाल २ बूझत बिकल लषनते को
 तुम नाथ तुमारो दास । को हम कोसलराज आर्य प्रभु तौ क्यों
 बिपिन निवास ३ खोजत जनकसुता बैदेही सुनत अनुज के
 बैन । चौंकि सीय सुधि किये कृपानिधि सलिल श्रवत दोउ
 नैन ४ । ७ । १०७ अतिसय विरह बिकल रघुराई । खोजत सीय
 विषाद प्रगट बहु अनुज रहे समुभाई १ निसा प्रबेस टिके गिरि
 ऊपर कहत बचन अकुलाई । लछिमन उठहु लखहु भूधर महुँ
 ज्वाल चहत निअराई २ निर्भर बारि लाइ वारहु नत आसन तट
 गयो आई । अग्नि नहीं है इन्दु उदय प्रभु पुनि क्यों धूम देखा-
 ई ३ हौ सर्वज्ञ सुजान कहत किमि वह धरनीकै छाँई । महावीर
 महिजा सुधि भै तब गिरे अवनि भँडआई ४ । ८ । १०८ सुखके
 निकेत ब्रह्म सर्वदा अकाम । हैं वियोग सीय के दुखी कृपाल रा-
 म १ कीन्हे नरवेष चरित ताही अनुहार । सुनि मन आचरज
 देखि अद्भुत व्यवहार २ लषन घोर सूर तपत धरो वृक्ष छाँह ।
 रजनी राबे कवन कथा हिमिकर सुरनाह ३ जानत किमि रथ
 कुरंग नध्यौ प्रनतपाल । महावीर मृग चब सिय सुरति करि बे-
 हाल ४ । ९ । १०९ अवनि परा प्रभु गीध बिलोके । रटतराम

सिय राम निरन्तर पीर दुसह तन रोके १ परस्यौ पानि कृपाक-
 रि रघुवर बिगत पीर आनन्द । भयो कह्यौ दसमुख गति कीन्ही
 लेइगो सिय सुखकन्द २ प्रान तजत दरसन लालच लगि जि-
 अत रहेउँ रघुवीर । सुफल मनोरथ कियो जटायू त्यागो तबहिं
 सरीर ३ निज गति देइ कृपा कीन्हो प्रभु भगतबल्लभ भगवान ।
 महावीर कोमल उर हरिसम तिभुवन नहिंकोउआन ४ । १० । ११०
 सवरी हरषित धाई सुनि आये रघुवीर । आइ पग लपटानी बहैं
 दोऊ दृग नीर १ अति पुलकित तन निज आश्रम लिआइ ।
 किय बहुविधि पूजा प्रेम पूरन अघाइ २ फल खाये रघुवर हिय
 हरषि बखानि । सुर बदत धन्य मन बिसमय आनि ३ तनत्यागि
 लीन भइ हरिके रूप । अबिचलगति दीन्हों तेहि कोसलभूप ४ ।
 ११ । १११ सवरिहि रघुवर सुगति दई है । पोच जाति निन्दित
 श्रुति लोकहु पावर विदित कथा अघई है १ मान्यौ केवल भक्ति
 नात हरि ताहू कहैं स्वलोक पठई है । सुनिवर चहत निरन्तर
 जो पद जेहि लागि जप तप रहतठई है २ जाति विचार किये नहिं
 नेकहु छन महँ संसृत निधिरितई है । अति दयाल प्रभु जनमन
 रञ्जन करुणाकर उरकृपामई है ३ जैजै विबुध भनत माहिमाकहि
 विपुल हृदय आनन्द छई है । महावीर से अधम सुद्धमे गावत
 विमल सुजस सदई है ४ । १२ । ११२ ॥
 इति श्रीगीतरामायणे आरण्यकांडेमहावीरदासविरचितं सम्पूर्णम् ॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड ॥

दोहा ॥ चले अनुज जुत रामप्रभु आइ मिले हनुमान । परे
 चरन प्रेमातुर रघुवर किय सनमान १ । ११३ सुनि सुकण्ठ को
 विपति बिसाल । करुना निधि सेवक मनरञ्जन रघुवर दीन द-

याल १ हत्यौबालिगारीसहि जनहित सन्तत सुरमुनिपाल २ अभ-
य बाह सुग्रीवहि दीन्हों मेटि कठिन दुख जाल ३ महावीर बरसात
पाइरहे गिरिपर राम कृपाल ४ । २ । ११४ (राग मलार) लछि-
मन लखहु पयद छवि छावत । गगन सघन उमड़े घन संकुल
दुति समूह दरसावत १ नटत मोरमन मुदित देखि प्रिय सुख जुत
सोर मचावत । मधुर मधुर धुनि गरजि बारिधर मम उर पेद बढ़ा-
वत २ तोय बुंद बहु गिरत अवनि लखि जोगिन्ह उर सुख पावत ।
सीय बिहीन तात मेरो मन दुखित बिरह तन तावत ३ जौलौं सुधि
नहिं मिलत प्रियाको तौलौं कछु नहिं भावत । महावीर प्रभु बि-
रद भगत हित जनुकरि प्रगट देखावत ४ । ३ । ११५ ॥
इति श्रीगीतरामायणे किष्किं धाकांडे महावीरदासविरचितं सम्पूर्णम् ।

अथ सुन्दरकाण्ड प्रारम्भः ॥

(राग बिलावल) पाइ नियोग रामको कपिगन । आये
सिंधु तीर हरषितमन । खोज सीय सम्पाति सुनायो । सुनि
सब उर अति बिस्मय छायो १ जामवन्त कह बचन विचारी ।
पवन पूत बल पौरुष भारी । तिभुवन बिदित बीर बलवाना ।
काहे मौन रह्यौ हनुमाना २ सुनतहि बाढ़ि लागु असमा-
ना । हेम सरिस तनु तेज महाना । कहहु रीछपति मेरु उ-
पारों । लै त्रिकूट सागर महुँ डारों ३ जनक सुतहि लेइ प्रभुहि
मिलावों । करों कहौ जोइ तुअ मन भावों । महावीर सिय खबरि
लिआवहु । केवल हरिसन मरम सुनावहु ४ । १ । ११६ सोहत
लंक जात हनुमान । नभ पथ सहज प्रकास भानुसम बल बुधि
तेज निधान १ पवन बेग गति रोक रहिन चले रघुवर बान् स-
मान । देखि देवगन सुमन बरषिबद धन्य अतुल बलवान २
मारि सिंहकहि भेजि समनपुर सुरसहि ठेलि सुजान । पारगयो

निर्भय हरिपद सुमिरत कपि बीर महान ३ देख्यौ विविधि बिटप
 फूले बहु अलिरस रसिक लोभान । महावीर आनंद हरषि मन
 सैल चढ़े करिफान ४ । २ । ११७ देखत लंक चढ़े गिरिऊपर कपि
 कुल कुमुद कलाधर बीर । कनक मई सब भवन बने अति तुंग
 मनहुँ छुए गगन तीर १ पहर परत अति कहर भटन्हको जनु
 कृतांत अरु काल जाल । तदपि असंक महाबल हनुमत उर धरि
 पद श्रीराम कृपाल २ पैठत लंकनारि सरबरिकिय मुख भंजनकरि
 सुवन समीर । नगर चले देखत रचनापुर अवलोके अगनित र-
 नधीर ३ फिरे छानि चहुँदिसा कतहुँ नहिं कीसहि परी जनकजा
 देखि । महावीर अंकित गृह श्री हरिनाम निरखि हरषित बिसे-
 खि ४ । ३ । ११८ जबहिं विभीषन जुगुति बखाना । गयो बीर
 तेहि बिटप निकट लखि सीय हृदय आनंद बिधि नाना १ दुखित
 देखि जानकी बिरह तन मगन दुखितउर भयेउ निदाना । हरि
 पद सुमिरि मुद्रिका तरुते नीचे डारिदिये हनुमाना २ उठीं मु-
 दित मुदरी पहिचान्यौ हर्ष सोक दोऊ उरआना । कहति कुसल
 कहु राम प्रान प्रति छेम सहित लछिमन बलवाना ३ को लायो
 यह बिरह सिंधुमें बूड़त मोहि भइ पोत समाना । महावीर भये प्र-
 गट बंदिपद बोलेउकपि करजोरिसुजाना ४ । ४ । ११९ जननी
 हौं रघुपतिको किंकर । मातु सत्य भाषहुँ फुर मानहुँ आयेउँ इत
 प्रेरित प्रभु रघुवर १ दिय पहिचान हेतु मुदरी यह सुरनायक स-
 बेस कृपाकर २ पूँछे सब वृत्तान्त कहे जेहि बिधि बानर हरि मि-
 लन भयोबर ३ महावीर परतीतिभई मन प्रेम पुलक आनंद हरष
 तर ४ । ५ । १२० क्यों कपि प्रभुहि बिरद बिसरी है । जेहि जयंत
 इक नयन कियो सोइ सरबस रावन लियो हरी है १ दीन दयाल
 सदा जन रंजन दुख भंजन दृढ बानि धरी है । कहब जोरिकर क-
 रुनानिधिसों केहि कारन अति देरकरी है २ कै अघ उदधि अ-
 भागिनि गुनि उर सुरति मोरिचित ते उतरी है । पल पल बितत
 कल्प अगनित सम हरि किमि निधुरता पकरी है ३ जौ नहिं मि-

ले बेगी रघुवर अब तौ मम मीचु सत्य निअरी है । महावीर सुनि
 सीय बचन कपि दीन मधुर बानी उचरी है ४ । ६ । १२१ हौं द-
 ससीसै मारिसकतहौं । जननी सत्य सुनहुँ न आन कछु प्रभु
 अपमान डरतहौं १ आयसु भंगन जौ उर आनहुँ तौ बल सहज
 भनतहौं । खल रजनीचर दल पतंग सम दव इव नासकरतहौं २
 मातु धीर धरु कछुक दिवस अब मैंकरजोरि कहतहौं । खोजपाइ
 अति बेगी कृपानिधिइत अइहैं कपि जुतहौं ३ रिपु बिनासि तोहि
 मिलहिं अवसि प्रभु पन करि सत्य बदतहौं । महावीर इमि बचन
 सुनत सिय हिय पुनि पुनि हरषतहौं ४ । ७ । १२२ सियहि प्रबोध
 विविधि विधि दीन्हों । आयसुपाइ सुमिरि रघुवर पद रावन बाग
 पयानो कीन्हों १ रखवारे बरजत हनि भागे सुनि दसमुख भट
 भूरि पठायो । पवन पूत मजबूत महाबल दलिमालि सब कहुँ गर्द
 मिलायो २ तब आयो घननाद कोप करि हन्यो प्रबल कपि मूर्खि
 गिरायो । अनीबिनास किये छन महँ सब उठा निसाचर अति
 खिसिआयो ३ ब्रह्म कांस मारोसि महिमा लागि अबधवीर आपुहि
 बँधवायो । महावीर बन्धनकरि संभ्रम हरषितरावणसभालि आयो ४ ।
 ८ । १२३ रेकपि तहीं बाटिका भंजे । सुनेन श्रवन मोहि कबहुँ सठ
 तैं खलु मम अनुचरन्ह बिगंजे १ लखौं असंक अजहुँ अति तो
 कहुँ नेकु न डरै गँवार । जानि परत तुवकाल सीस पर नाचत
 भयो सवार २ तरु परमारथ हेतु अहैं फल खायउँ रुचि अनुसार ।
 कीसस्वभावरूप कछु तोर्यौं क्याहौं कियेउँ असार ३ निजसेवकते
 बूझुमारिमहँ प्रथम कियो नहिंवार । महावीर तेहि हत्यौं चढ़े जोइ
 संजुग महिललकार ४ । ९ । १२४ रावन मानु सिखावन मेरो ।
 राम बिमुख तैं अज हरि संकर हित करिसकत न तेरो १ द्रोहमोह
 अभिमान दुखदअति करिबिचार हियहेरो । छाड़ि भजहि रघुपति
 पद पंकज आरति हरन सेवरो २ सब अपराध माफकरिहैं प्रभु दीन
 बचनजहँ टेरो । जौं सन्मुखहवै चलै सरन तैं कृपासिंधुके नेरो ३
 बोलातमकि पोचकपि बरै बोलत बचन अनेरो । महावीर सुनि

हनूमानउर क्रोधितभयेहु घनेरो ४। १०। १२५ (रागमारू) प्रभु
 कोजौहोतो अनुसासन । तौतोहि सैनसहितदलि अबहीं कौतुक
 सत्यदेखवतेउँ रावन १ ख्यालहिं तोरिभुजा खलसबरे दसन स-
 हित भंजनकरि आनन । चौपटकरिलंकानगरीको लेइजातेहुँ
 सियएकहि फानन २ जौनियोगकहुँ होतअबैलगि सौंहवातकर-
 तेउ कुलघालन । सहेउँकठोर दुष्टबचतेरो केवलप्रभु आज्ञाकरोँपा-
 लन ३ सुनिउरजरि दसकंठ कह्यौखल पूँछिजरावहु बेगिप्रज्वा-
 लन । महावीर लंगूर अगिनि लखि निबुकिचढ़े रिपुमहल अगा-
 रन४। ११ १२६ हाहाकार लंकभयो भारी । हयगय भवन कनक
 मंदिर सब जरत न कोउभट सकत नेवारी १ बढीज्वाल चहुँओर
 प्रबल अति रोवहिं भीत मगन पुर नारी । हाय मातु हा भ्रात तात
 कहि ब्याकुल देहिं रावनहिं गारी २ सुख जुत राज करत बरबस
 एइँ बड़ो बयरुकरि प्रलय हँकारी । धुनत सीसपुर देखि देखि सबु
 कछु न बसात बिकल मनहारी ३ छनमहँ छार किये नगरी कपि
 खोइ परिश्रम सिंधु मझारी । महावीर करजोरि खड़ेभये बिदाहेतु
 सुनि सीयदुखारी ४ । १२। १२७ (दोहा) तुम सुत चाहतजान
 अब गुनत दुसह दुखहोत । कृपासिंधु सनमोरिसब कहियो बिपति
 निसोत १३ । १२८ (खेमटा) सुवनप्रिय प्रभु बिनु परत न चैन ।
 अतिलालसा दरसकी संतत तरसतहौँ दिनरैन १ बदन इन्दु
 सम परम प्रकासक बोलत मधुरीबैन २ श्याम सरूप सुभाय मनो-
 हर बल विक्रमके अैन ३ महावीर करुनारस पूरनदासन्ह आनँद
 देन ४ । १४ । १२६ बहु बिधि सिय धीरज दीन्हों । चूड़ामनिलै
 बाँदि चरन कपि राम समीप गवन कीन्हों १ चलेउ सपदि बल-
 वान तुरत आयेउ सागर एहि पार । जामवंत सन हालकही
 गवने जहँ राम उदार २ प्रभुसर्वज्ञ मिले उठि सादर पूँछेउ कुसल
 कृपाल । कह ऋक्षेस केसरी नंदनकीन्हो काजबिसाल ३ हनूमान
 भेंटेउ पुनि रघुबर कपि उर हरषअपार । महावीर सिय खबरिविपति
 सब कहेउ समीर कुमार ४ । १५ । १३० साजि सैन कपि कोस

लराउ । चले महेस मनाइ मुदित मन लखि सुर सिद्धि पसाउ १
 अवनि गगन मग गवन भालु कपि पूरितदसो दिसाउ । दलत सेष
 फन हलत भूमि भयो दिसिपन हृदय डराउ २ सगुन सीय अस-
 गुन तन रावन बारहि बार जनाउ । हर्ष सोक लंकापति सोचत
 खल मति मलिन सुभाउ ३ पहुँचे प्रभु सागर तट दल जुत उतरे
 सहित समाउ । महावीर रघुनाथ विजय जस पुलकित तन अति
 गाउ ४ । १६ । १३१ कहत विभीषन दोउ कर जोर । तात राम
 सन बयरु छाड़ि मिलु मानु बचन यह मोर १ सुरनायक भगत-
 न्हि मन रंजन करुना सिंधु खरारि । तिनते समर भूमि महुँ द-
 समुख अवसि पाइहौ हारि २ सुनत कोपि हति चरन कहेसि
 खल जाइ तिन्हैं कहु नीति । मम आश्रित रहि दुष्ट मलिन मन
 अति तपसिन्ह पर प्रीति ३ चलयौ अनुज उठि सभा अस्तभइ
 रावन महल गयो । महावीर मय सुता चरन परि बहु विधि बि-
 नय कियो ४ । १७ । १३२ (लावनी) विनय मदोदरि रावन
 सो यौं करै सुनो पीतम प्यारे । कपि दल सजि के राम चन्द्र जू
 आइ टिके सागर पारे । परम बल्लभा श्री रघुवरकी छल करके पिय
 घर आने । महाकाल के काल राम जू तिनसो बरबस हठ ठाने ।
 जिते सुरासुर बिनु श्रम ते तुम तिन्ह समान प्रभुहू जाने । बचन
 मानिये मैं अबला की परमार्थ स्वारथ साने । जनक सुता रघु-
 नाथ दिये बिनु सुख सपने नहिं तूम्हारे । कपिदल सजि के राम
 चंद्रजू आइ टिके सागर पारे १ जौ अभिमान करो भुज बल कै
 जीति सको तुम तिन्हैं पिया । यहसब भूल आप की संततक्या
 तुमने अनुमान किया । खर दूषन त्रिसिरा वाली सब बड़े बड़े
 तुम सम बलवान । लीलहिं तिनको नाथ राम हति बल साली
 पुरुष भगवान । मद भंजन गंजन रिपुदल बल अजय एकप्रभु
 बल भारे । कपिदल सजिके राम चंद्रजू आइ टिके सागर पारे २
 महाबली रनधीर वीर हरि विबुध संत के हित कारी । नरतन
 धरिके परे ब्रह्महैं लीला अद्भुत बिस्तारी । परम दयाल दोष अघ

भजन सरनागत की भय टारी । तीनिउँ भुवन विरद जाहिर है
 सदा राम आरतहारी । तिनसों जाइ मिलो सुभकीरति परम भाग्य
 लौटै सारे । कपिदल सजिके रामचन्द्र जू आइ टिके सागर
 पारे ३ सुनो प्रिये अनुमान.हमारा भूलन मानै हारि हिया । राम
 चंद्र जू मधुसूदन हैं आदि सक्ति जूअहैं सिया । मुक्ति आपनी
 घर आनी मैं बिनु श्रम सुलभ सिद्धि पाई । अब नहिंदेउँ. फेरि
 जानकी मुक्ति रामसों बनिआई । महावीर भगवान मिलों रनशु-
 द्ध एक मत उर धारे । कपिदल सजिके रामचंद्र जू आइ टिके
 सागर पारे ४ । १७ । १३३ (रागवसंत) चलयौलंक त्यागि द-
 सकंठ भ्रात । सुमिरत हरिगुन गन पुलक गात । जेहि पद अज
 संकर धरत ध्यान । देखिहों तेहि मोसमधानि न आन १ जन
 रंजन भजन विपति वृन्द । रघुवर संतत आनंद कंद । निर्मल
 जस अबिचल छवि अगार । सिय रमन कृपाकर प्रभु उदार २ से-
 वक सुख दायक सोक हरन । हों लखव आजु सोइ स्वामि
 चरन । यहि भांति मनोरथ बहु प्रकार । कर मुदित आइ गयो
 सिंधु पार ३ कपि गन विस्मित उरकरि बिचार । बरनेउ रघुपति
 तब भेद सार । सुनि महावीर सादर सुजान । हरि निकट
 तुरत लाये बलवान ४ । १८ । १३४ हों प्रभु दसकंधर को भाई ।
 निसिचर बंस मलिन मन अतिसय पाप सिरोमनि साँई १ आ-
 येउँ सरन दीन भय आतुर त्राहि त्राहि रघुराई । अस कहि करत
 दंडवत लखि हरि उठे तुरत हरषाई २ दीन बचन अति प्रभु मन
 भायउ भेदे कंठ लगाई । अभय बांह दै दिग बैठायो बूभेउ कुसल
 भलाई ३ कीन्हेउ तिलक लंक को लखि हरषी बानर समुदाई ।
 महावीर नभ मुदित देव गन रहे निसान बजाई ४ । १९ । १३५ ।
 केहि बिधि तात जलधि उतरों । जो कहु कहहु बेगि संमत करि
 अवसि उपाय करें १ मांगहु गैल सिंधु सों प्रभु यदि मानै कहो
 तुम्हार । नतरु अग्नि सर सोखिय सागर जो मन रुचै उदार २
 नहिं मानेउ जड़ संधानेउँ सर तब अतिसयअकुलाइ । आयो

सरन भेंट धारि आगे बोल्यौ सीस नवाइ ३ पवन अनल जल
 सैल सहज जड़ मति गति रहित अयान । तिन्हके चूकन कोप
 करिय प्रभु कृपासिंधु भगवान ४ नाथ सरन आयौ दुख मेटहु क-
 रुना भवन कृपाल । भये प्रसन्न मृदुल उर रघुवर विनती सुनत वि-
 साल ५ सेतुबंध करि चलहु कृपानिधि सब विधि सिधि पइहै ।
 जेहिते विमल सुजस तुम्हरो जन महावीर गइहै ६ । २० । १३६
 इति श्रीगीतरामायणे सुंदरकांड महावीरदासविरचितं सम्पूर्णम् ॥

अथ लंका काण्ड प्रारम्भः ॥

कपिन्ह सेतु रचना कीन्हों । देखि बनाव कटक उतरन हि
 त प्रमुदित प्रभु आज्ञा दीन्हों १ चलीभीर अतिभूरि बलीमुख
 भालु बरनि नहिं जाइ । सिद्धि देव गन्धर्व आदि नभ कौतुक
 लखत सुहाइ २ कोउ नभ पन्थ जात कोउ जलचर ऊपर चढ़ि
 भये पार । सेतु बंध पर चले बहुत पुनि रघुपति सुख आगार ३
 उतरे सैनसहित रघुनन्दन किय सुबेलपर बास । महावीर राव
 न नगरी में सुनि सब उर भइ त्रास ४ । १ । १३७ (चंचरीक)
 बैठे प्रभु अनुजसंग गिरिसुबेल सोहैं । चापवान रुचिर हाथ बल-
 कल कटिकसे भाथ सोभा अतिसय बिसाल सुरमुनिमनमोहैं ५
 जटामुकुट सुभगसीस छविनसक्त भनिअहीस उपमाकहुँ देव
 नाग मनुजमध्यको हैं । चहुँदिसि बानरविराज तेहिविच को
 सलधिराज लसत हँसत गंदमंद कपिगन मुखजोहैं ६ अंगदहनु
 मान जुगल चापत हरिचरनकमल कहतमंत्र लंकनाथ श्रवण
 लागियोहैं । दसमुख अभिमानभूरि छनकमाहिं कियेदूरि मुकुट
 गिरत विकल गुनत अवधोंकाहहोहैं ७ सुभट सकल मलहिं हाथ
 जौनियोग देहिं नाथलंक तमकिलै सबेग जलधि में डुबोहैं । गा-
 वतजन महावीर महिमा रघुसवीर कुलिस तृनहिं तृनहिं असनि

अवसि चहत कियोहैं ४।२। १३८ भोरभये रघुनाथ सुजान ।
 अंगदबोलिकहयो प्रभुसादर कृपा सिंधु भगवान १ लंकहिजाहु
 हेतुममतुम्हरे लायकहै बुधिवान । तासु कुसल ममकाज होइजेहि
 कियो सोई बलवान २ चरनबंदि निजभाग्यभूरिगुनि चलेसुआ-
 युषमान । निसिचर नगर कोलाहल अतिसय सबउरसंक समान
 ३ पहुँचो राजद्वार कपि निर्भय बलबुधि तेजनिधान । महावीर
 जुवराज सभामहँ प्रविसे बीरमहान ४।३। १३९ सुनुदसकंठपरम
 हितबानी । सेवतजासु चरन अजसंकर नारदादि जोगीबिज्ञानी
 १ जोप्रभु सकल घराचर नायक इष्टदेव सुभसंभु भवानी । तासों
 बैरकिये भलचाहत तजहि कुमति यह प्रकृति गुमानी २ तवतक-
 सीरमाफकरिहैं सब कोमल उररघुकुलमनिजानी । जगतमातु
 लैमिलै रामकहँ कहिमृदुबैन दीनरस सानी ३ सुनतकोपिरावन
 खलबोल्थौ रेकपिमंद मुधाअघ खानी । महावीर नहिंजानु मोहि
 जीतेउँ त्रिभुवन भुजबल अभिमानी ४।४। १४० रेकपिसुनुमे
 रीप्रभुताई । महामृत्यु टहलुईबनी ममपाव पखारत हृदय डराई १
 सिरपै छत्रलिये हिमिकररवि करतप्रकाससदा पुरआई । हैकोतवा-
 लकृतांत जासुपुर भिस्तीमेघ माल समुदाई २ ताकहुँ लघुकरिअ-
 धममूढ़ मति करतबदन पर मनुज बड़ाई । कहजुवराज कोपिसठ
 बोलहि बचन सँभारि दुष्टखल साँई ३ रामबिमुख असहाल होइत
 वपनकरि रावनकहौं जनाई । महावीर कपिभालु तमासहि दलि
 हैं मुखभूलिहि मनुसाई ४।५। १४१ पनकरिकपि महिचरन
 धर्यौ । हारिपरेखल छलबल करिबहु काहूसों नटर्यौ १ विस्मित
 सभासहित दसकंधर सोचत हृदयडर्यौ । जाके दूतकेरयह कर-
 नी प्रभुआगमन पर्यौ २ बालिकुमार गुमान शत्रुको सबविधि
 वीरदर्यौ । सादरआइ रामपद पंकज सीसनाइ उचर्यौ ३ रावन
 काल बिबस रघुनंदन सुभ सिषखलु निदर्यौ । महावीर पठवहु
 भटबंदर चाहत मूढ़मर्यौ ४।६। १४२ आयसुपाइ कीससबधा
 ये । लैकरसिपर बिटपनष आयुध रावन नगर कोपिकपि आये १

घेरेन्हिकोट चहूँदिसि मुखको भेरिनफीरि निसान बजाये । राव-
 नखबरिपाइ पठयोभट चलेतमीचरन समुहाये २ सूलसेल असि
 तोमरमुद्गर परिघपखान अस्त्रकरलाये । भिरेसुभट इतराम सु-
 जस कहि उतदस मुखजय जयतिमनाये ३ दलतनिसाचर भालु
 बलीमुख रामकृपा अतुलित बलपाये । महावीरगहि अवनिपछा-
 रत संजुग महिते अरिबिचलाये ४ । ७ । १४३ मेघनाद सुनिबाह
 रगढ़के आइ समरमहि कपिन्ह प्रचारी । धायेनष बिटपायुधधारी
 भालुबलीमुख भुजबलभारी १ लड़तबीर दुहुँदलबल छलकरि
 निसिचर भटमाया अनुसारी । बरषिधूरि छनमहँ रजनीचर अंधा
 धुंधकियो अंधियारी २ भागेबानर रीछ राह नहिं पावत व्याकु-
 लरहेउ पुकारी । बिकल देखिकटकई प्रबलकेपि धाये पवन पूत
 गिरिधारी ३ रावन सुतरथ भंजिलातहनि मूर्छित बीर अवनि
 तल पारी । महावीर संग्रामघोरलखि चलेसेष सरचाप सुधारी
 ४ । ८ । १४४ लछिमन कोपि बान संधाने । कटत दनुज
 सत खण्ड खण्ड होइ गिरत अवनितल भट अकुलाने १ कोउ
 भट घायल अर्द्धजीव भये कहरत बहुतक परे उताने । समर स-
 रित अति बहति भयावन रुधिरदेखि कादरन्ह डेराने २ भूतप्रेत
 पीवहिं मज्जहिं गोमाय गीध सब अति हरषाने । इन्द्रजीत बहु
 छल बलकरि खल संकित निज विनास अनुमाने ३ सक्ति वि-
 रंचिदत्त छाँडैसि तब गिरेबीर महि मूर्छित जाने । महावीर चह
 लंक लिआवन उठे न चलयौ हृदयभय माने ४ । ९ । १४५
 फिरी अनी दोउ साँभ बिचारि । रामानुजहि केसरीनंदन लेइ
 आये उर धारि १ अनुज देखि सर्वज्ञ कृपानिधि रघुपति सहज
 सुजान । दुखित भये रोदत बिलपत अति बहु विधि कृपा नि-
 धान २ हा प्रिय बंधु अवध जइहों किमि तिय लगि अनुज
 गवाइ । पुछिहैं लोग कहब का तिनते हृदय बिज्जु बैठाइ ३ मो
 हि बिभीषन सोचु अधिक तेहि का गति होइहै तात । महावीर
 लखिबिकल मोहि किन उठि समुभावहु भ्रात ४ । १० । १४६

सुनत बिकल सब बानर भालु । श्रवत सलिल चष निरखि राम
 मुख कपि गन विपुल बेहालु १ जामवंत हनुमंत प्रचारेउ लंका
 जाहु सुजान । लावहु बैद सुषेन जलद कीन्हे सोई बलवान २
 राम चरन परि कह्यौ रोगहा एहिनिशि भीतर नाथ । मूरि स-
 जीवन जौ आवै तौ जिअैं लषन रघुनाथ ३ सुनि सब कहे बेग
 निजनिज पै निसा गये लौं बीर । महाबीर सुनि राम जगत
 प्रभु बिलपत परम अधीर ४ । ११ । १४७ कहत कर जोरे सुनि
 हनुमान । कृपा सिंधु प्रभु दुखित काहि लागि करुना करत सु-
 जान १ जौ अनुसासन करिय नाथ तौ कौतुक करौ महान ।
 मारौ मीचु काल धरि फारौ रोकौ भानु उगान २ सुधा सरिस व-
 सुधा बिच लावौं मेटौं सब कलकान । जौ लौं पलक परै नहिं
 तौलौं आनौं गिरि भगवान ३ नाथ प्रताप करै यह सबरो स-
 हजहिं कृपा निधान । महाबीर लावहु दोनाचल चले बांदि बल-
 वान ४ । १२ । १४८ धाये बेगि निसाचर हति मग लौटे द्रोण
 सबेग उपारे । आये अवध भरतराजस गुनि बिनुफरवान बीर त-
 किमारे १ कहत राम सियराम गिरेमहि भरत दौड़ि कपि ह-
 दय लगाये । अति लजाइ बहु भांति जगावत उठेन अधिक
 बिरहउर छाये २ जौ रघुनाथ प्रसन्न मोहिं पर जागहु तात सुनत
 बलवाना । उठि जै कहि मिलि समाचार सब आये प्रभु समीप
 हनुमाना ३ भेंटैउ रामकृतज्ञ कपिहि पुनि बैद उपाइ कियो सुख
 मानी । महाबीर जागे तब लछिमन निरखि कीस दल हरष स-
 मानी ४ । १३ । १४९ भोरभये लछिमन बलवाना । प्रभुपद बांदि
 साजि करसर धनु आये संजुग भूमि सुजाना १ मेघनाद भट
 लड़त बीर दोउ देखिदेवउर अति भयआना । राक्षस छल अ-
 नीति रनकरबहु कोपि अनंत बान संधाना २ सुमिरि प्रभुहि
 मारेउ छाती बिचवान लगत भो खल बिनु प्राना । निरखि देव
 गन सुमन बरषि बहु मुदित मगनमन हनहिं निसाना ३ आये
 रघुपति पास दसानन मरम सुनेउँ अतिसय दुखमाना । महाबीर

श्री राम विमुख फल विपति निसानहिं होत बिहाना ४ । १४ ।
 १५० (छंद हरिगीतिका) रोवहिं जुवति हति पानि उर तेहि
 वरानि पुरुषारथ महा । सबकरति करुना विविधि विधि धरि धीर
 तब दसमुख कहा । संसार महुँ जनमें मरे लखु दण्ड वा कल्पान्त
 है । अस जानि व्यर्थ बिषाद त्यागहु नास तनु सिद्धान्त है १५ ।
 १५१ दसबदन तियन्ह प्रबोधि बहुघट श्रवन मंदिर आयऊ ।
 अति घन उपाय कठोर श्रमकरि बीर अनुजजगायऊ । सबसमर
 चरित बखानि जेहि विधि जानकी हरिलायऊ । सुनि कुंभकरन
 बिषाद बस अति सोचु सीसनवायऊ १६ । १५२ (बरवाछंद)
 अवसर गये तात आयउ मोपास । अबधुवजानहुँ उर तुम आपन
 नास । तज्यौ बिभीषन तव पुरसोइ पहिचान । प्रथमहिं नारदकहेउ
 मोहिं यह ज्ञान १७ । १५३ (छं० ह० गी०) दसकंठ कोटिन्ह कुंभमद
 अरु महिष विपुल मँगायऊ । करि खान पान विमत्त राक्षस समर
 भूमि सिधायऊ । कपिलख्यौ आवत प्रबल रिपुगहि सैल तरुभट
 धायऊ । इकसंग कोपि प्रहार तदपि न मुख्यौरन समुहायऊ १८ ।
 १५४ (छंद तोटक) नहिंनेकु मुख्यौ हनुमानलख्यौ । उरकोपि महा-
 बलसालि हत्यौ । मुठिकातन लागत भूमिपरा । उठिदेह सँभारि
 प्रकोपभरा । पुनि आपुहन्यौ कपि घूमिरहे । महिजात थम्हे कर
 जानहुगहे । तबक्रुद्ध निसाचर भूरिभयो । दलिकीस बलीन बेहा-
 लकियो १९ । १५५ (छं० ह० गी०) धरिकोटि कोटिन्ह कीसइक
 सँग मेलिमुख तनु मीजई । महिपटकि बहुभट सटकि दानव भालु
 कपिदल छीजई । भागेबिकल बलवानटेरत सरन श्रीरघुनायकं ।
 लखिभय ग्रसितनिज कटकप्रभु सजि चापअरुकर सायकं २० ।
 १५६ बहुतीरदनुज सरीरबेधे ब्यालगनजनु धायऊ । अतिप्रबल
 बीरन भूमिटेकेउ राम सन्मुख आयऊ । अबबचौ नहिंहौं खात
 असकहि बाइमुख धावतभयो । नभसुरन्ह हाहाकारकरि बिस्मित
 विपुलडरप्यौ हियो २१ । १५७ प्रभुकालसर संधानि संभ्रम मध्य
 उरतकि मारेऊ । गिरो भूमि डुहुँदल भूरिदबि बिनुपान देवनिहा-

रेऊ । दुंदुभी बाजत गगन बरषहिं सुमन जैजैजै कहैं । रनअजिर
कोसलनाथ तनछवि निरखि परमानंदलहैं २२।१५८ अनुज नि-
धन रावन सुनिपायो । अतिविषादवस धुनत सीसखल मरनठा-
निनिज कटकसजायो १ जुरेदनुज कज्जल समानतनु सुभटस-
कल संग्रामजुभावे । जनुजमाति जमगंग निकटचलि समुभतन
हिनिजमरनुगँवारे २ विविधायुधधर दयारहित असगुन समूह
पावतमगभूरी । चलत हलत बसुधा अहिपतिफन दलतअकास
धूरिभरपूरी ३ संजुग भूमिआइ निअराने कपिन्ह लख्यौ रावन
खल आयो । महावीर भूवरतरिवरगहि अति बलवान कोपि
सबधायो ४ । २३ । १५९ (लावनी) उतरावन दलइत भालु
बलीमुखसारे । भिरिदपटि भूपटि बलवान कीसभटभारे । निश्चर
रावन की जैजै कार मनाते । सब कीस भालु श्री रामचंद्र गुन
गाते । भट सुभट दुऔदिसि क्रुद्ध जुद्ध मदमाते । तन अरुन
भयो इभछतज नयन रंग राते । राखस दल समिटी भूरि सकल
तन कारे । भिरिदपटि भूपटि० १ राखस बहु पर्वत संग समूह
चलावैं । कपि कूदि गहैं पुनि पलटि तिन्हैं समुभावैं । मारैंचट
पट भट लोटि महामेंजावैं । धरि चरन पछारि पचारि भजतगहि
लावैं । बानरन्ह दंड मँह दुष्टकटक संघारे । भिरिदपटि भूपटि० २
सोनित सरिता अति बहीभयंकर भारी । मज्जहिं प्रेतादि नटैं
जोगिनि दै तारी । आमिषभक्षी गन जीव बिलोकि सुखारी । र-
जनीचर कटक विनास भई लखिसारी । रावन संजुगमहि आइ
कपिन्ह ललकारे । भिरिदपटि भूपटि० ३ अब नहिं बचिहौ कहूँ
भागि कहै दससीसा । स्यंदन ते कूद्यौ भूमि कियो उर रीसा ।
गहि कोटिकोटि कपि संगकरै खल खीसा । संकट पहुँच्यौ अति
भूरि विकलमे कीसा । तब महावीर तेहि हन्यौ मूर्खि महिपारे ।
भिरि दपटि भूपटि बलवान कीस भट भारे ४ । २४ । १६० उठि
दसकंठ कोपकरि भारी । हनेउँ कपिहि बहु भूपटि दपटि खल
भालु बली मुख फौज विड़ारी १ माया विपुल प्रगटि लखि बा-

नर विकल त्रसित भागे भय भारी । त्राहि त्राहि रघुवीर कृपाकर
 हरहु दुसह दुख आरतहारी २ करुना भवन रामकोमल चित
 उठे हरषि सुर मुनि हितकारी । धनुष बान कर साजि चले अरि
 दलन अतुल भुजबल असुरारी ३ धायो दसमुख सौह चाप
 गहि करत प्रलाप समूह सुरारी । महावीर बहु तीर वरषि तोप्यौ
 रघुनाथहि बान मभारी ४ । २५ । १६१ रिपुके सर रघुनन्दन
 काटे । पुनि निज धनुष तानि छांड़ेसर चारिउ दिसा गगन मग
 पाटे १ कटत सीस पुनि नयो जमतलखि विबुध विपुल संका
 उर आने । रावन रामसमर जस कोटिहु जुग लौं गिरा न स-
 कहिं बखाने २ कोपि सिलीमुख राम हत्यौ उर गिरा अवनि
 अतिसय अकुलाना । हतौं कहाहैं राम त्यागि तन तेज तु-
 रत हरि बदन समाना ३ लेखा सुमन मालवरषत मन हर्ष गगन
 किन्नरि गनगावैं । महावीर रघुनाथ विजय लहि समरभूमि सोभा
 अति पावैं ४ । २६ । १६२ रघुवर अजै विजयपाई । भई नियोगविभी
 षन कहू तेहिं रावन कृपा कियो हरषाई १ राम कहे लछिमनसुकंठ
 अंगद हनुमान चले सुखपाई । राजसिंहासन थापि तिलककरि
 सादर बहुनृप नीतिसिखाई २ सहितसमाज रामपहँ आये जाम-
 वंत सबकथासुनाई । तातबोलावहु सीयबेगिसुनि पवन पूत सीता
 पहिंजाई ३ समाचार कहि सादर पुर तें सिविका सुभग अनूप
 मँगाई । महावीर बैठीं सिय प्रमुदित हृदय सुभिरि सुर मुनि रघु-
 राई ४ । २७ । १६३ राम सीयको मिलन विशेष । प्रीति पुनीत
 दुऔदिसि अतिसय बरनि सकैं नहिं शेष १ प्रभु पद बन्दि ज-
 गत जननी उर अभिमत लाभ अनन्द । जनु जोगी लहि जोग
 सिद्धि फल हर्ष मिटे भवफन्द २ जै जै कहत देव जस गावत ज-
 नकसुता रघुवीर । अनुज सहित सोहत करुनानिधि भज्जन सुर
 सुनि भीर ३ अजय शत्रु रावन बध कीन्दे त्रिभुवन जस रह्यौ
 छाड़ । महावीर रघुपति रन लीला परमानन्द मन गाइ ४ । २८ ।
 १६४ पुष्पकजान सजाइ सखा जुत संग वायुसुत अंगद वीर ।

भरत सुरति बहुवार करत प्रभु चले अवध रघुपति रन धीर १ स-
मरभूमि मग बास देखावत सीतहि भक्त बल्लल भगवान । उतरे
तीरथ राज हरषि प्रभु चले मुदित मन करि असनान २ हनूमान
कोसलपुर आयो समाचार सब देखि सुजान । खबरिआइ रघुना-
थहि दीन्है पहुँचे कोसलपुर भगवान ३ हरष मगन सब नगर
लोग हरि दरसन हेतु सुनत धाये । महावीर प्रभु बिमल सुजस
कहि परमानंद प्रेम उर छाये ४ । २९ । १६५ ॥

इति श्रीगीतरामायणेलंकाकांडमहावीरदासविरचितं सम्पूर्णम् ॥

अथ उत्तरकांड प्रारम्भः ॥

(फाग चौताल) रघुवंसमनी रिपु जीति अवधपुर आये । ह-
नुमान कपीस बिभीषन अंगद संग सखा छबि छाये । भरत सकल
रनिवास पुरीजन हरि दरसनके हित धाये १ अति आदर गुरु
चरन गहेउ प्रभु मुनि उर हरषि लगाये । भूरिभाव भाइन्ह भेंटत
हरि लखि बिबुध सुमन बरसाये २ पदरज सीस धरे मातन्ह के
बहु बिधि आसिष पाये । हिलि मिलि भवन चले करुनानिधि
तन प्रेम पुलक सरसाये ३ बैठे राज सिंहासन रघुवर पवनज चँ-
वर डोलाये । महावीर लखि मुदित मगन मन अति बिमल सु-
जस जेहिं गाये ४ । १ । १६६ (होली) आजु अवध आनंद
भयोरी । रिपु रन जीति राम भ्राताजुत अरु मिथिलेस किसोरी ।
संग सुकंठ बिभीषन हनुमत अपर सखा बहुतोरी । निकट पुर आइ
गयोरी १ गुरु बसिष्ठ रनिवास भरत सब पुरजन साज सजोरी ।
मिलनहेतु गवने मुनिवर अति प्राति न जात कहोरी । प्रेम उर
छाड़ रहोरी २ मातन्ह भेंटि तथा परिजन मिलि गुरुहि प्रनाम
कियोरी । भूरिभाव भाइन्ह भेंटैउ हरितन अति पुलक छयोरी ।

चले करसों करजोरी ३ बैठे राज सिंहासन प्रभु बहु जाचक दान
दियोरी । महावीर एहि अवसर हरिसों पेट खलाइ कह्योरी । भक्ति
बर मांगि लियोरी ४ । २ । १६७ (चंचरीक) देखो छवि मंजु
मृदुल रामकी लोनाई । रेष रुचिर चरन भ्राज सुभग पदज विधु
समाज मानो गिरिनील उपर बैठि है अथाई १ पीत वसन लसत
अंग छजत कसे कटि निषंग कर सरोज धनुषवान देवन्ह सुख-
दाई । सुंदर बर उर बिसाल मुक्तनके पुंजमाल बिप्र चरन अंक
लालित सुखमा समुदाई २ कंठकंबुसम सोहाय दुति कपोल कहि
न जाय श्रुतिहु अगम सकल भाँति बरनत कठिनाई । आनन
आनंद कंद हास मनहुँ उदय चंद मदन कोटि लजहिं देखि ब-
दनकी निकाई ३ भृकुटि बंक तिलकभाल मुकुट सीस अति र-
साल श्याम बरन हरन मोह कोमल चितसाँई । महावीर मुदित
देखि जीवन फल सुफल लेखि कारुणीक कृपा सिंधु रघुपति र-
घुसाई ४ । ३ । १६८ (खेमटा चंचरीक) श्री रामचंद्र आजु सीय
संग छजत हो । नील बपुख पदज भास मनहुँ कोटि रवि प्रकास
मुनि चकोर चंद्र विमल ध्यान धरतहो १ मृदुल कंजसम सरीर
भुज प्रलंब प्रबलवीर मोह तरुन तिमिर विपुल सकुल दलतहो २
पीत वसन सुभग अंग निरपि लजहिं छवि अनंग गाइ बेद गुन
न कबहुँ पार लहतहो ३ महावीर प्रभु उदार दास दोष दलनहार
देहुभक्ति दान विसद विरद बहतहो ४ । ४ । १६९ (घाँटो)
निरपहु बदन निकइआ हो रामा श्रीरघुवर की । श्याम सरोज
सरिस तन सुन्दर हास किरिन हिमिकर की १ कोटि मनोज
रतीउर लाजत उपमा नहिं पटतरकी २ सीय सहित हरि कनक
सिंहासन सोभा सींव सुघरकी ३ महावीर एहि रूप निरंतर ध्यान
मगन मन हरकी ४ । ५ । १७० (खेमटा) निरपि छवि जननी
तन मन वारी । अवलोकत रघुवीर सीय दुति हरष मगन महता-
री १ दनुजाधिप निश्चर कठोरखल त्रिभुवन विदित सुरारी । मं-
जुल मृदुल करन्हते क्योंकर ताकहुँ तात सँघारी २ जो सुरेस बंधन

करि भुजबल इंद्रजीत भटभारी । हति रत्न भूमि विजय जस लीन्हे
सुरनर मुनि भयटारी ३ किये अमानुष करम सुवन सब केवल
कृपा पुरारी । महावीर कुलदेव सराहति बार बार बलिहारी ४ ।
६ । १७१ निसिदिन अवध लोग हरषित मन । सुर सुर ईस बि-
रंगि संभुनित आवहि लषन चरित धरि नरतन १ परमानंद राम
गुन गावत विमल पुलक आनंद अति त्रिभुवन । रामराज सुख
समउ कहिय किमि पुरवासी धर्मिक सुचि सज्जन २ गुनागार
पंडित सब श्रुति पथ चलत निपुन नय सुहृद ज्ञान धन । सिसि-
कत देव मनुजतन बिनु उर चहत निरंतर हरिपुर जनमन ३ रा-
मचंद्र जस लोक लोक महँ प्रचुरभयो अविचल संतत गन । म-
हावीर प्रभु सकल सराहत धन्य धन्य अवधेस संतधन ४ । ७ ।
१७२ (होली) देखु सखी हरिहोरी मचाई । श्रीमिथिलेस कुँवरि
आलिन्हजुत छबि समूह दरसाई । पुलकित अंग रंगकर लीन्हे
रघुनंदन ढिग आई । बनी अति रूप लोनाई १ भ्रातन्ह संग राम
कर कुमकुम लाल गुलाल सोहाई । खेलनलगे भाग हिलि मिलि
प्रभु सोभा बरनि न जाई । रह्यो आनंद उर छाई २ करत कूटि
हाहा तारी दै बिहँसत सुनि रघुराई । भावसे बिसस किये हरिको
सब आपनि जीतकराई । रहे सुर सिद्ध सिहाई ३ धन्य अवधनर
नारि सुकृत अति कहत गिरा सकुचाई । महावीर जे रामचरन
मन रहे सदा लय लाई । सकल छल लोभ बिहाई ४ । ८ । १७३
आज अवध बिच फाग मचोरी । श्री रघुनंदन अनुज सखा जुत
अरु मिथिलेस किसोरी । सखियन संग उमंगभरीं अति चाचरि
साज सजोरी । छरीकर सोहत भोरी १ प्रीति पुनीत गुन नागर
दुहुँदिसि पुलक छयोरी । अति आनंद सुधा बरषत जनु अंग
गुलालन्ह बोरी । कहैं हरि खेलो न होरी २ प्रेम बिसस प्रभु राम
कृपाकर तिय बस भाव कियोरी । कहति सकल हारयो प्रभु मोसो
हौं जीत्यों तुमसोरी । चली नहिं कछु बरजोरी ३ सुर अनुराग
सुभाग सराहत विपुल सुमन बरसोरी । महावीर धनि भूरि सुकृ-

तते अवध जन्म जिनकोरी । ब्रह्म सुख लूटि रह्योरी ४।१।१७४
 (फाग) राजमहल बिच आजु सखीरी है रही होरीहोरी । उत
 रघुनंदन अनुज सखालै इत सीता सँगगोरी १ पुलक उमंगअंग
 अति छायो अनहद फागरचोरी । धरि बहियां रघुराज कुँवरकी
 तिय बिहंसैं मुखमोरी २ लालगुलाल रामपर डारत श्रीमिथिलेस
 किसोरी । देखि सबै सुखबंदि मनावैं चिरजीवै यह जोरी ३ प्रेम
 प्रमोद प्रवाह बहेउ सुख सो नहिं जातकहोरी । महावीर अति
 भाग सराहैं बिबुध सुमन बरसोरी ४ । १०।१७५ खेलन हरिसन
 होरीरी सखिया राजमहल में जाओं । जाइ बिलोकौं श्री रघुवर
 पद हिलि मिलि फागखेलाओं १ होइहै सिद्धि मनोरथ सबविधि
 करिहौं निज मनभाओं । परसि मनोहर अंग रामको तियमहँ
 धन्य कहाओं २ सीयसहित हरिरंग भवनमें राम कृपाकर पाओं ।
 जो सुख अगम सदा सुर मुनिको सोइ सुख सरित बहाओं ३ जौ
 चुकिहै एहिअवसर आली तौतैं मंदसुभाओं । महावीर जन आ-
 तुरहै अति दरसन तृप्ति कराओं ४ । ११ । १७६ अवध नगरकी
 भूरि बड़ाई । विष्णुबिरांचि पुनीत लोक सब सादर रहेउ विमल
 जसगाई १ श्रीहरि राम ब्रह्म नरतन धरि सहजहिं प्रगटभये जहँ
 आई । पुरवासिन्ह सुरसिद्ध बखानत अतिअनुराग सुभागसिहाई
 २ सेषसंभुकह नवल चरित नित प्रीति पुनीत सदा अधिकाई ।
 सो सुख सुजस कल्पसत सारद गावहिं तबहुँ पारनाहिं पाई ३
 जदपि अकथ जानत सब कबिदर तदपि भक्तिकरि कहेसुहाई ।
 महावीर प्रभु दीनबंधु लखि सीतारमन चरन चितलाई ४।१२।
 १७७ (घांटो) बरनों में अवध बसइआ हो रामाहरि अनुरागी ।
 निसि दिन मगन राम गुनगनमें मति गति मंजुलपागी १ मुनि
 उर ध्यावत सुर बिरांचि सब सिसिकत जेहि पदलागी २ संकरउर
 मानसके वासी जोहत तेहिबड़भागी ३ महावीर रघुनाथ चरन
 गति नितनव विमल अदागी ४।१३। १७८ गावहिं पुरनर नारि
 निरंतर श्रीरघुनाथ चरित सुखदाई । एकहि एक सिखाव कमल

पद प्रीति अमल त्रिभुवन सुरसाई १ प्रबल सुबाह ताड़का भं-
जन बिस्वामित्र यज्ञरषवारे । जनकसभा अभिमान तौरिनृप संभु
चाप खंडनवारे २ सीय बरचो भृगुनाथ लजावन बन मुनिगन
दरसन दीन्हे । सूपनखा कुरूप खरदूषन विनुश्रम दुष्ट प्रलय
कीन्हे ३ अभयबाह सुग्रीव विभीषन दियोताहि सब जगजाना ।
लंकाखल समूहसुर दुखप्रद किये देवबंदीखाना ४ सकुल सदल
रावन मारचौ प्रभु है दयाल बंधनकाटे । मगनदेव लखि बिरद
बाहुबल सुजस नहीं बरनत आंटे ५ आये अवध राज बैठे प्रभु
कीरति सिद्ध बिबुध गायो । महावीर सुभसमय जानि अति भक्ति
दान जाचत पायो ६ । १४ । १७९ ॥

दोहा अंक बेद ग्रह इन्दुको संवत फागुनमास ।

हरिबासरसितभानुदिनपूरनग्रंथप्रकास १५ । ३ = ० ॥

इति श्रीगीतरामायणे उत्तरकांडमहावीरदासविर-
चितं सम्पूर्णम् ॥

अथ विनयप्रकाशकेपदप्रारम्भः ॥

(रागकल्याण) जयजय गणपति उदार भंजन भवभय
अपार अभिमत दातार सीव गुनगन समुदाई । बंदतपद देववृ-
न्द अति सय आनंद कंद मेढत दुख मंदद्वंद संतन्ह सुखदाई १
सोहततन अति बिसाल सुखमा संकुल रसाल समन सकलमोह
जाल निरपत रुचिराई । रामचरन कंज भृंग पूरितरस रसिकअंग
संतत मनरहत संग विमल प्रेमछाई २ द्विरदबदन बिधु प्रकास
छविमयूषलसतहास ऋद्धि सिद्धि आसपास सेवतमनलाई । भूषन
मनिगन दुकूल शोभा अनुकूल विपुल गंजन त्रयसूल मूलतम
रविकीनाई ३ सुंदर वरबाहु चार कलिमलदल दलनिहार महिमा
आगार रह्यौ बेद सुजसगाई । महावीर दीन द्वार रटतएषुबार बार
रघुपति सुखसार भक्ति देहदेवसाई ४ । १ । १८१ (रागवसंत)

बंदों शिव संकर प्रनतपाल । जेहि कृपा बिनासत मोहजाल ।
 जस गावत मुनिवर विमल बेद । सुमिरत मनको सबहरतपेद १
 प्रभुदीन हितू करुना अगार । सेवत कल्पद्रुम सहस डार । चित
 कोमल अवठर परमदानि हरहर दयाल है कलुष ग्लानि २ दव
 कठिनहलाहल जरतलोक । करि पान किये सुरगन विसोक ।
 परहित रत निरुपधि अपर कवन । कासीपति सम आनंदभवन ३
 दाता प्रचंड महिमा अपार । दुख गंजन भंजन सोकसार । जन
 महावीर तव रटत द्वार । हरिभक्ति देहु संकर उदार ४ । २ । १८२
 संकरसम को दाता उदार । सेवक हित अति करुना अगार ।
 प्रिय जाचक संतत लगत जाहि । हर सम कोउ त्रिभुवन अपर
 नाहि १ सिर गंग जटा सोहत रसाल । राकापति सिसु छवि छ-
 जत भाल । तनगौर भूति अहि लसत जाल । डमरू त्रिसूलकर
 भुज बिसाल २ सोभित गिरिजा अति बाम अंग । शिव ब्रह्मरूप
 मर्दन अनंग । कोमल चित प्रभु आनंद कंद । हर आसुतोष ब-
 रनत कबिंद ३ सुर वृन्द बचावन हरन मोह । नहि जानि परत
 उर केतिक छोह । बर महावीर आरतहि देहु । सिय रामचरन सं-
 तत सनेहु ४ । ३ । १८३ (लावनी) श्रीरामचन्द्रके पद कम-
 लन्हि चित दीजे । यह नरतन बीताजाय भजन करिलीजे । क-
 रि खेल कूद बालापन सहज बितायो । जब जुवाभयो जुवती प्र-
 संग मन भायो । आई वृद्धा चिंता अपार भरि मनमें । बीत्यों
 औचट तन त्यागभयो एक छनमें । पछतात जात हिय हारि कहा
 अब कीजे । यह नरतन बीताजाय भजन करिलीजे १ अति बड़े
 भूप जे त्रिभुवन बस करिलीन्हा । तिनहूँ कहँ जगमें काल कलेऊ
 कीन्हा । केवल हरिनाम सहाय अंत कहँ होई । प्रिय तनय ति-
 याधन धाम न हितकर कोई । आखिरहै रंज समय नाहक के
 गजि । यह नरतन ० २ संसार असारमें क्या तृष्णा दौड़ावै । म-
 मता मद बारि तरंग समूह बढ़ावै । ये हैं सब दुखद अंत हित क-
 रते नाहीं । आवै करि इन्हें बहोरि दोजकके माहीं । जेहि ते सुख

होइ मिटै दुख सोई कीजे । यह नरतन ० ३ हित जानि मानि प्रिय
 बचन सुनै दै काना । भजु कोसल पाल कृपाल राम भगवाना ।
 मिटि है सब दंद फंद संकट भव सूलै । लहि जीवन लाहु सुखी
 बिचरै किन भूलै । है महावीर आनंद मूल दुख छीजै । यह नरतन
 बीताजाय भजन करिलीजै ४ । ४ । १८४ (भजन सुर भैरवी)
 हे मन राम प्रेम नहिं माते । विषय भोग महँ लुधा प्रबल अति क-
 बहूँ नाहिं अघाते १ वनिता सुवन धामधन परिजन इनहीं के रँग
 राते । अंत समय कोइ काम न अइहें को काके सँग जाते २ सं-
 तत कुपथ चलत भव आमय दिन प्रतिदिन अधिकाते । सतगुरु
 बैद कथा हरि संजम बिनु नहिं रोग थिराते ३ जनन मरन दारुन
 दुख संभव सोइ फिरि फिरि तुम पाते । महावीर आनंद एक विधि
 श्रीरघुपति गुन गाते ४ । ५ । १८५ हरिजू हों पापी अति भारी ।
 जेहि आचरन नीकजन तुमते होत सो अवसि विसारी १ काम
 क्रोध मद लोभ निरंतर रत मति मलिन अघारी । विपति अपर
 अवलोकि सुखी लखि पर ऐश्वर्य दुखारी २ मेरे दोष कल्पलौं
 सारद कथन करै निरुआरी । पइहै पार नहीं कवनौ विधि कृपा
 सिंधु असुरारी ३ दीनबंधु सेवक अघ भंजन आपनि विरद वि-
 चारी । महावीर आरत सरनागत सरन लेहु भयहारी ४ । ६ । १८६
 करो मन वादिन को उपचार । नीच मीचु जब आइ ग्रसे तोहि त-
 जि चलिहौ संसार १ मायामोह द्रोह परि पूरनहौ कलिमल रत भार ।
 जेहि जमदंड भले पावहुगे दुस्सह पीर अपार २ भारी विपति परै
 सिर ऊपर भंखहु विविधि प्रकार । सखा सहोदर सुहृद तहाँ कोउ
 हित नहिं करत तुम्हार ३ बिनु हरि भजन जतन कर कोटिहु पै न-
 हिं मिटिहि स्वभार । महावीर परलोक लोकहित श्रीरघुवीर उदा-
 र ४ । ७ । १८७ (सोरठ बिहाग की धुनि) यों मन होइ निरंतर
 माली । हृदय थल करि घेरद्विज गुरु प्रीति सुंदरिनाली १ बिसद
 जस सियराम को बरसरित नीरदवाली । बिरव रघुवर चरन रति मति
 विमल अविचल थाली २ परम नेह सुबारि सींचहि बाटिका करु



लाली । कपट छल भाँखर निरावहि भगति बिलसहि डाली ३
 दिवस निसि जोगवहि सदा जनिपरहि कबहुँक खाली । महावीर
 बिहार सुख प्रद संत संगति साली ४ । ८ । १८८ (रागदेस)
 हे मन एहि विधि होउ कसाना । उर अंतर सुचि भूमि बनावै म-
 ति क्यारी रचुनाना १ बिमल गुरु भूसुर चरनन्हरति कृषीकार म-
 हाना । बृषभ पूजन भजन रघुपति बिसद गुन गन गाना २ बीज
 परम पुनीत हरिपद प्रीति बवहि सुजाना । नेह जल सींचहि सु-
 अंकुर बिरति अरु बिज्ञाना ३ सदा अबिचल भक्ति राघव दिव्य
 फल अनुमाना । महावीर सुकाल नरतनु अंत पुनि पछिताना
 ४ । ९ । १८९ सेवहु रामचरन मनलाई । भजत महेस सेम जेहि
 संतत प्रीति पुनीत लगाई १ स्वपच सवर खस जमन आदि खल
 जिनमें कौनबड़ाई । किये पवित्र रामकरुना निधि मानी अति
 सेवकाई २ अधम अजामिलके समूह अधजो नहिं जाई गनाई।
 सकृत् लिये रघुनाथ नामतेउ रहे परम पदपाई ३ हरिसे मृदुल
 हृदय त्रिभुवनकोउ कहूँनहिं परत लखाई । महावीर प्रभु भवभय
 भंजन कृपासिंधु रघुराई ४ । १० । १९० (रागभैरव) जीह रामराम
 राम रटिबोजौं तजिहै । तौतोहि अति मंदजानि कलुष देखिलजि
 है १ जहांजहां सुखीहेतुआश्रम बीचारिहै । बिनारामनामजपेतहां
 भीरुभारिहै २ सुरपुरकी कवनकहै नर्कहू धिनाइहै । अमरलोक
 बसे तहूँ तिहूँताप ताइहै ३ अचल प्रीति जौलौं हरिनाममें न
 लाइहै । महावीर तौलौं सुखस्वप्नहूँ न पाइहै ५ । ११ । १९१ सादर
 जपु रामराम रसना अभिमानी । कलिमल छल कथन छोड़ि
 नर्ककी निसानी १ गावत सुरसंभुसंत बेद बिमलवानी । सुमिरे
 सिय रामचरन होयगी सयानी २ मेरो सिष मानुसुखद अतिहित
 सुभजानी । जपै रामनाम एकप्रीति अचलठानी ३ अहनिसिरहु
 रामहीकी भक्तिमें लोभानी । महावीर पूर्ण प्रेम सुदृढ़ हृदयआनी
 ४ । १२ । १९२ रसनातैं रामरामरामरामरदुरे । पर अधपरदोष कथन
 मनक्रमते हटुरे १ काहे बकि गालगूल वृथा श्रमहिं लटुरे । गाउ

बिमल रामसुजस सुदृढ़ नियम अटुरे २ सादर जपुरामचरन बिष-
यन्हते छटुरे । बरनत जेहि संत सदा सुखद बेदबटुरे ३ मोहसूल
खानि जानि ताते रहै फटुरे । महावीर रामनामप्रीति अचल ठटुरे
४ । १३ । १९२ (भजनरांगगौरी) रामभजोमन रामभजोमन राम
भजो चितलाईरे । सेवत जाहि संभु सुक सारद नारद मुनिसमु-
दाईरे १ बिनुहरि कृपा न सुखपइहै कहूँ करिहै कोटि उपाईरे । अ-
चल प्रेम सियराम चरनतें संसय सोकनसाईरे २ सुधावारि मृग
दुखद जानुखलु ताहीमें अनुरागारे । महामोह संसार घोर निसि
सोवत कबहुँन जागारे ३ जौलौं मनक्रम बचन रामपद उपजन
उर बिस्वासारै । महावीर भव बिषम बिपति अति तौलौं होत न
नासारै ४ । १४ । १६३ ॥

इति .

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपा
मई सन् १८९३ ई० ॥

हक्रतसनीफ़ महफूज़ है बहक़ इस छापेखाने के ॥

३ जुज १ वर्क